हिंदी

सुलभभारती

पाँचवीं कक्षा

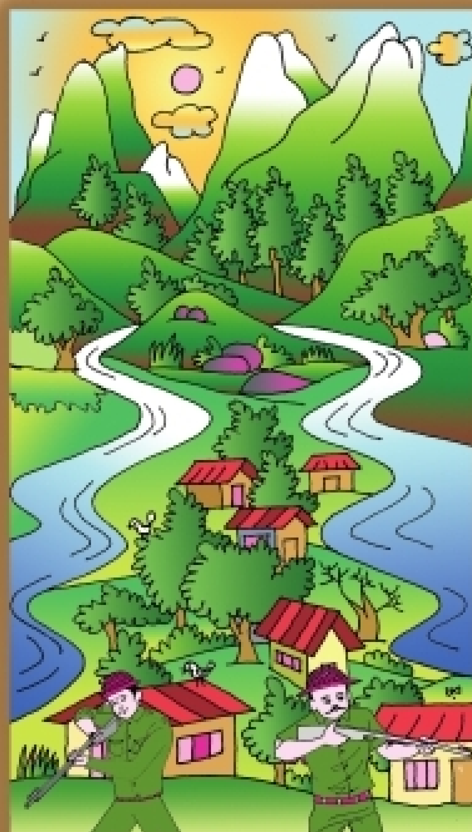

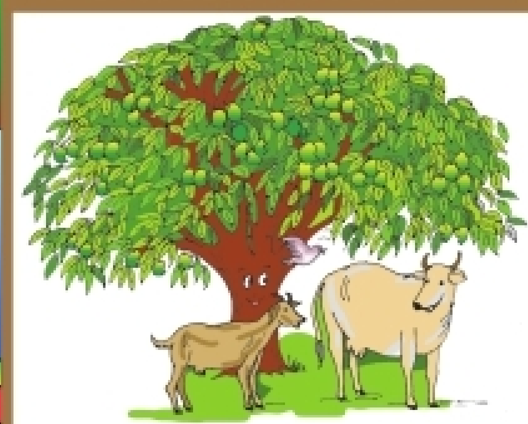

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक: प्राशिसं/२०१४-१५/८५४३/ह/भाषा/मंजूरी/ड-५०५/३४२ दिनांक :- १९/०१/२०१५

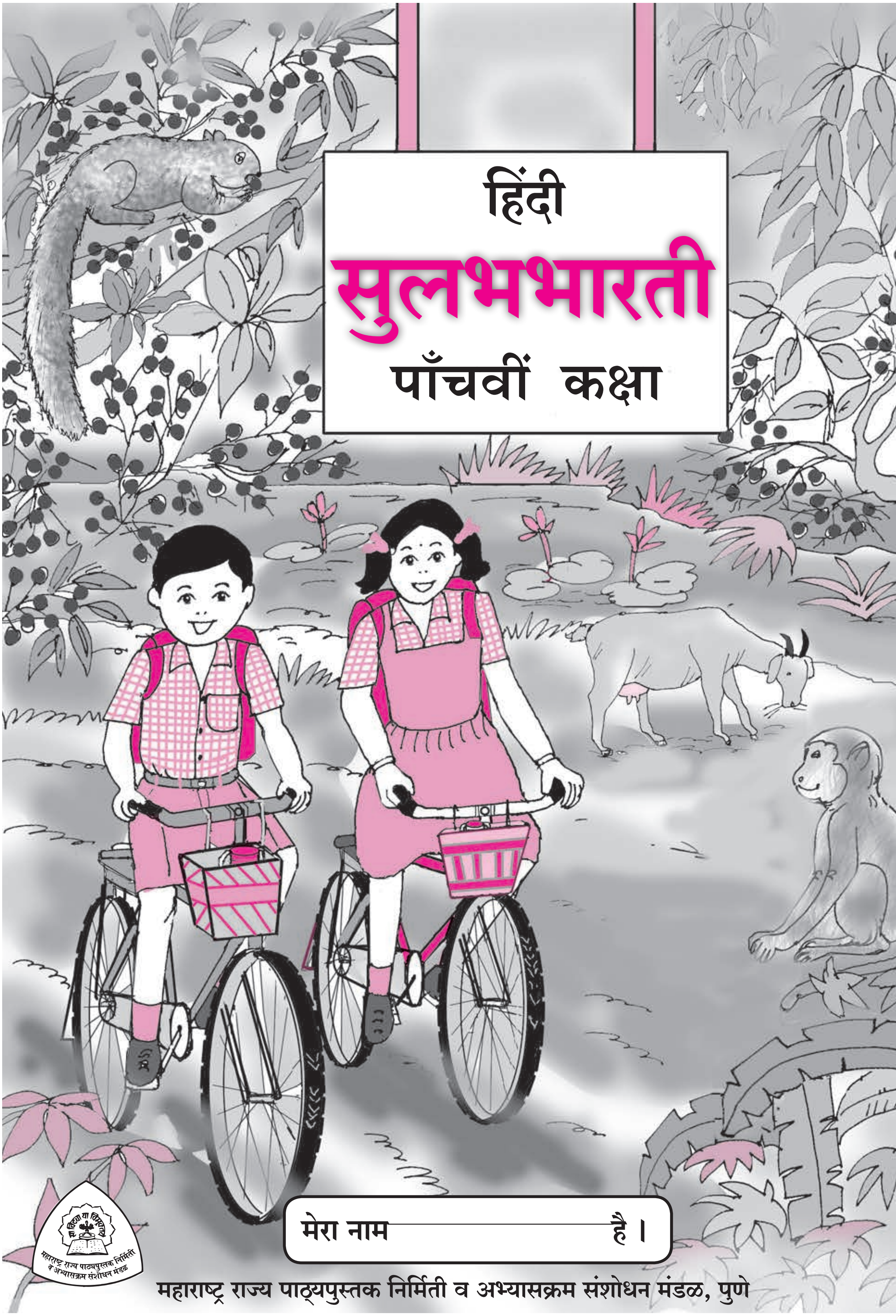

हिंदी

सुलभभारती

पाँचवीं कक्षा

मेरा नाम ________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१५

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे-अध्यक्ष, डॉ. हेमचंद्र वैद्य-सदस्य,
डॉ. साधना शाह-सदस्य, श्री रामनयन दुबे-सदस्य,
श्री रामहित यादव-सदस्य, श्री कौशल पांडेय-सदस्य,
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला-सदस्य,
डॉ. अलका पोतदार-सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे,
प्रा. अनुया दळवी, श्री संजय भारद्वाज,
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, डॉ. दयानंद तिवारी,
श्री अनुराग त्रिपाठी, श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी,
श्री उमाकांत त्रिपाठी, प्रा. निशा बाहेकर,
डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर,
श्रीमती मंगला पवार, श्री नरसिंह तिवारी

संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

संयोजन सहायक :
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : राजेश लवळेकर

चित्रांकन : लीना माणकीकर, राजेश लवळेकर,
मंगेश किरवडकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव

मुद्रणादेश :

मुद्रक :

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप -२००५' दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी द्वितीय भाषा (संपूर्ण) 'सुलभभारती' की पाठ्यपुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । पाँचवीं कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष आनंद हो रहा है ।

हिंदीतर विद्यालयों में पाँचवीं कक्षा हिंदी शिक्षा का प्रथम सोपान है । पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए इस बात का ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो । विद्यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा शिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए योग्य बालगीत, कविता, चित्रकथा और रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है । पाठ्यपुस्तक में अन्य विषयों को भाषाई दृष्टि से समाविष्ट किया गया है । इन घटकों के अध्यापन के समय विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-अनुभव के नियोजन में शालाबाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार से जुड़ी बातों को जोड़ने का प्रयास किया गया है । व्याकरण को भाषा प्रयोग के रूप में दिया गया है ।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए सूचनाएँ 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित शिक्षकों, विशेषज्ञों द्वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है । 'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, चित्रकारों तथा गुणवत्ता परीक्षक डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

पुणे
दिनांक :-
२० दिसंबर २०१४
मार्गशीर्ष कृ. १३
शके १९३६

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
	✻ आओ खेलें	१
१.	नंदनवन	२,३
२.	बूँदें	४
३.	योग्य चुनाव	५
४.	कश्मीरा	७
५.	पहचान हमारी– भाग (१)	८,९
६.	पेटूराम	१०
७.	बधाई कार्ड	११
८.	करो और जानो	१२
९.	नीम	१३
१०.	गड़ा धन	१४
११.	मित्रता	१६
१२.	बचत	१७
१३.	पहचान हमारी– भाग (२)	१८,१९
१४.	मैं सड़क हूँ	२०
१५.	व्यायाम	२१
१६.	बोलो और जानो	२२
	✻ स्वयं अध्ययन	२३
	✻ पुनरावर्तन १,२	२४,२५

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	गाँव और शहर	२६,२७
२.	जीवन	२८
३.	भाई-भाई का प्रेम	२९
४.	बालिका दिवस	३१
५.	रोबोट	३२
६.	जुड़े हम	३३,३४
७.	(अ) बोध	३५
	(ब) समान – विरुद्ध	३६
८.	बीज	३७
९.	मुझे पहचानो	३८
१०.	मुझे जानो	३९
११.	वीरों को प्रणाम	४०
१२.	सपूत	४१
१३.	राष्ट्रीय त्योहार	४३
१४.	(अ) हम अलग – रूप एक	४४
	(ब) छुक-छुक गाड़ी	४५
१५.	ज्ञानी	४६
१६.	बचाव	४७
१७.	निरीक्षण	४८
१८.	चलो-चलें	४९
	✻ स्वयं अध्ययन	५०
	✻ पुनरावर्तन ३,४	५१,५२
	✻ शब्दार्थ, शब्द पहेली, उत्तर	५३,५४

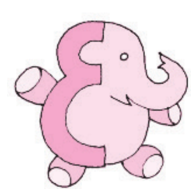

● पहचानो और बताओ :

✲ आओ खेलें

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्यार्थियों से पूछें कि वे कौन-से खेल खेलते हैं । चित्रों का निरीक्षण करवाकर उनपर चर्चा कराएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दें । उनके पूर्वानुभव की जानकारी प्राप्त करें, इससे अध्ययन-अनुभव में सहायता मिलेगी ।

● **देखो, बताओ और कृति करो :**

१. नंदनवन

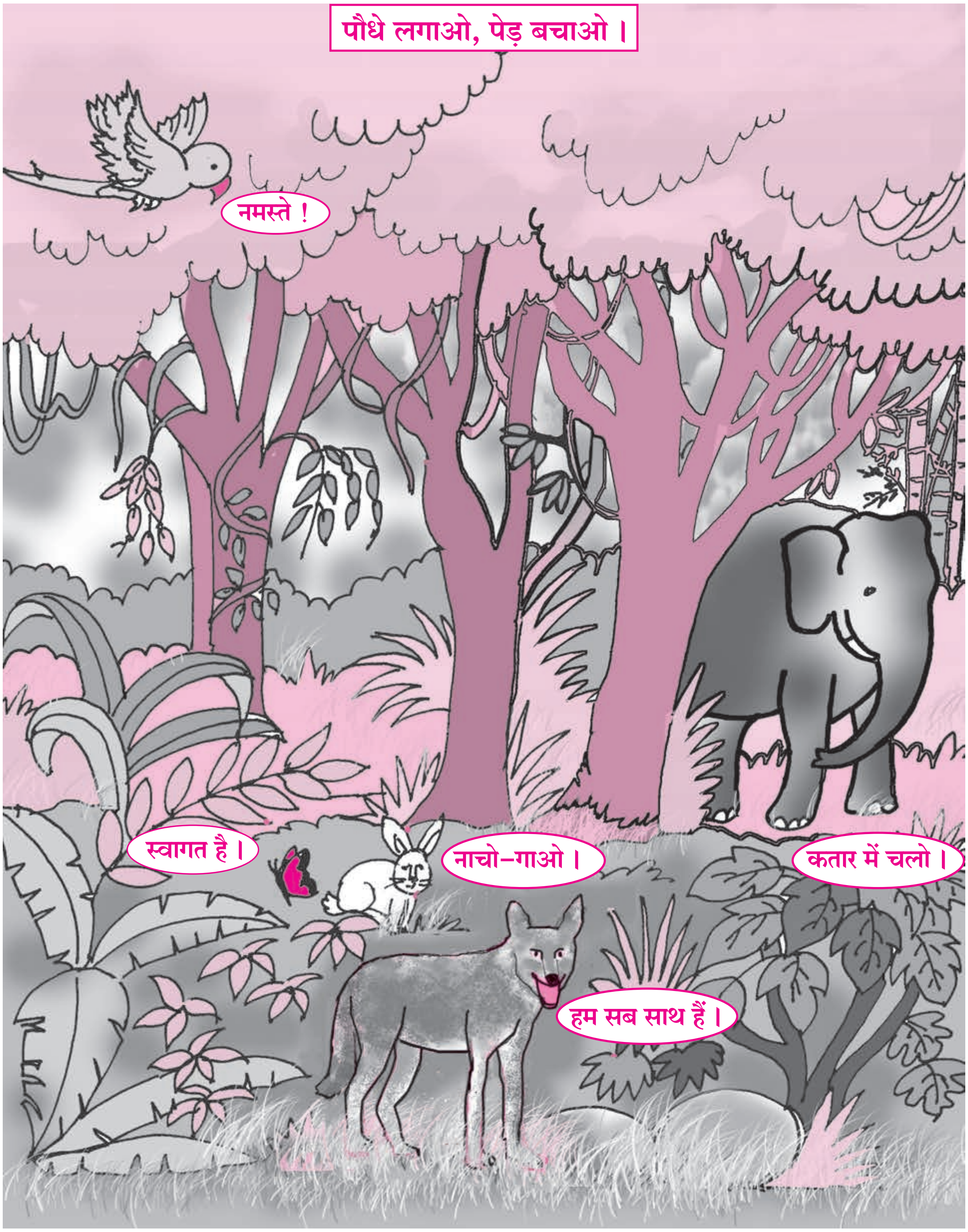

❑ चित्र के प्राणियों की कृतियों पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से अन्य परिचित प्राणियों के नाम पूछें । प्रणाम, स्वागत आदि की सामूहिक और एकल रूप में कृतियाँ करवाएँ । प्राणियों की बोलियाँ बुलवाएँ । इसी प्रकार अन्य चित्रों का वाचन करवाएँ ।

पहली इकाई

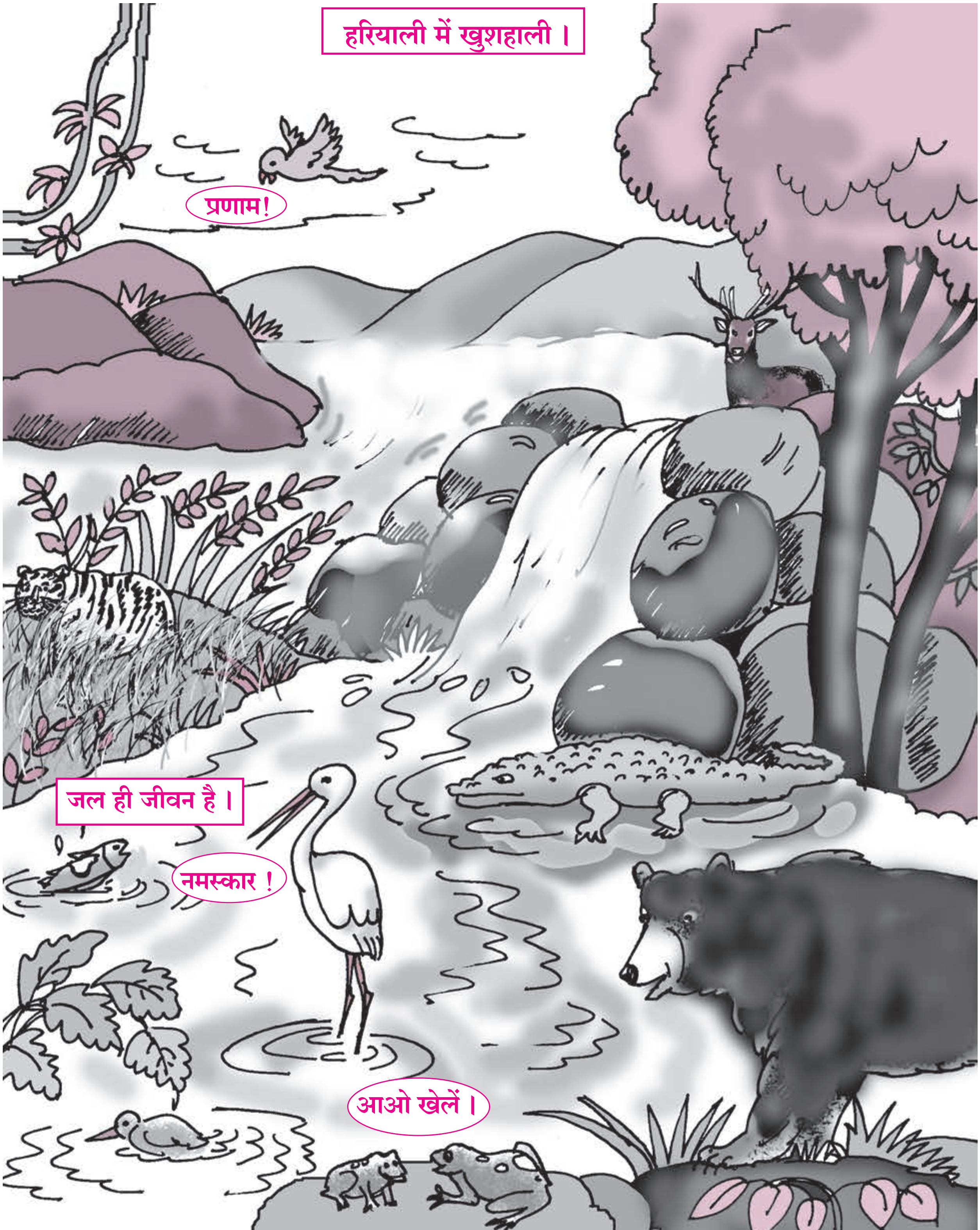

❑ विद्‌यार्थियों से कल्पना करने के लिए कहें कि प्राणी क्या-क्या कह सकते हैं । चित्र के वाक्यों को सुनाकर उनपर विद्‌यार्थियों से चर्चा करें । प्रश्न पूछकर सुनिश्चित करें की उन्हें समझ में आ रहा है । पर्यावरण संतुलन में प्राणियों का महत्त्व समझाएँ ।

● **सुनो और गाओ :**

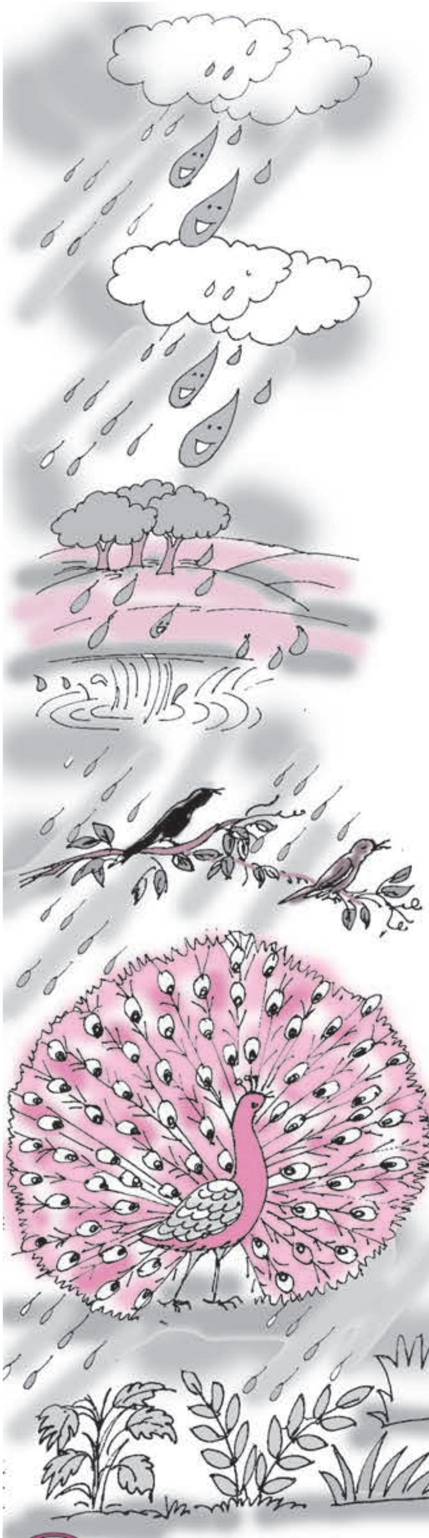

२. बूँदें

रिमझिम-रिमझिम गातीं बूँदें,
धरती पर हैं आतीं बूँदें ।

खेतों, बागों, मैदानों में,
हरियाली फैलातीं बूँदें ।

धरती से नालों, नदियों में,
सागर में मिल जातीं बूँदें ।

गरमी से तपते लोगों को,
शीतलता पहुँचातीं बूँदें ।

मेंढक, मोर, पपीहे, कोयल,
सबका मन हरषातीं बूँदें ।

पुरवाई के रथ पर चढ़कर,
इठलातीं, मुसकातीं बूँदें ।

– रोहिताश्व अस्थाना

१. कविता में आए हुए लयात्मक शब्दों को ढूँढ़कर सुनाओ ।
२. बूँदें क्या-क्या करती हैं, बताओ ।

❑ पूरी कविता उचित हाव-भाव, लय, गति, अभिनय के साथ बार-बार सुनाएँ । दो-दो पंक्तियाँ सुनाकर विद्यार्थियों से दोहरवाएँ । कविता का सामूहिक, गुट, एकल रूप में पाठ करवाएँ । कविता प्रश्नोत्तर द्वारा समझाएँ । परिचित कविता उनसे कहलवाएँ ।

● **सुनो और दोहराओ :**

३. योग्य चुनाव

राजा मंगलसेन के मंत्री जगतराम बूढ़े हो चुके थे । उन्होंने राजा से स्वयं को सेवामुक्त करने की विनती की । राजा मंगलसेन ने कहा, ''आप पहले अपने जैसे सेवाभावी, परोपकारी और ईमानदार मंत्री का चुनाव कर लीजिए, तभी आपको सेवामुक्त किया जा सकता है ।'' जगतराम ने आदेश दिया, ''राज्य में ढिंढोरा पिटवा दो कि राज्य के नए मंत्री का चयन अगले गुरुवार को किया जाएगा । इस पद के इच्छुक ग्यारह बजे राजदरबार में पहुँचें ।'' हरकारे गाँव-गाँव ढिंढोरा पीटने लगे ।

चयनवाले दिन राजदरबार की ओर जाने वाले मार्ग पर सुबह से ही नवयुवकों की भीड़ लग गई थी । सैकड़ों की संख्या में युवक दरबार की ओर जा रहे थे । इसी रास्ते पर एक तरफ एक वृद्ध हताश-सा बैठा था । उसकी बैलगाड़ी का एक पहिया रास्ते के किनारे कीचड़ में फँस गया था । वृद्ध ने कई बार पहिया कीचड़ से निकालने की कोशिश की पर असफल रहा । मंत्री पद के अनेक उम्मीदवारों ने राजदरबार जाते समय यह दृश्य देखा पर किसी ने भी वृद्ध की सहायता नहीं की ।

❑ चित्र देखकर क्या हुआ होगा, विद्यार्थियों को बताने के लिए कहें । पूरी कहानी सुनाएँ और दोहरवाएँ । सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यार्थी ने कहानी को समझते हुए सुना है । उन्हें सत्य, बंधुता संबंधी कहानी सुनने और सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

उम्मीदवार युवकों में एक था कर्मवीर । कर्मवीर निर्धन परिवार का प्रतिभाशाली नवयुवक था । वह तेजी से राजदरबार की ओर जा रहा था । उसी समय बैलगाड़ीवाला वृद्‌ध एक बार फिर पहिया कीचड़ से बाहर खींचने का प्रयास कर रहा था । यह दृश्य देखकर दरबार पहुँचने की चिंता न करते हुए कर्मवीर सीधे कीचड़ में उतरा । जोर लगाकर उसने बैलगाड़ी का पहिया कीचड़ से बाहर निकाला । वृद्‌ध ने उसे ढेरों आशीर्वाद दिए फिर इनाम में कुछ रुपये देने चाहे पर कर्मवीर ने विनम्रता से मना कर दिया ।

देर हो जाने की आशंका से भागते-दौड़ते कर्मवीर दरबार पहुँचा । वह हाँफ रहा था । उसके कपड़े कीचड़ से सने थे । सारे उम्मीदवार उसे देखकर हँसने लगे । तभी बैलगाड़ीवाला वृद्‌ध भी वहाँ पहुँचा । वह वृद्‌ध कोई और नहीं बल्कि स्वयं मंत्री जगतराम थे ।

उन्होंने सारी घटना राजा को सुनाई फिर जगतराम ने राजा से कहा, ''महाराज ! कर्मवीर में वे सारे गुण हैं जो राज्य के मंत्री के लिए आवश्यक हैं ।'' सारी बातें जानकर राजा मंगलसेन बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा, ''जो सामान्य आदमी की पीड़ा से दुखी होता है, उसे दूर करने का प्रयास करता है, वही राज्य के ऊँचे पद पर बैठने का अधिकारी होता है । जगतराम जी ने योग्य व्यक्ति का चुनाव किया है । आज से कर्मवीर राज्य के नए मंत्री होंगे ।''

– सुधा शर्मा

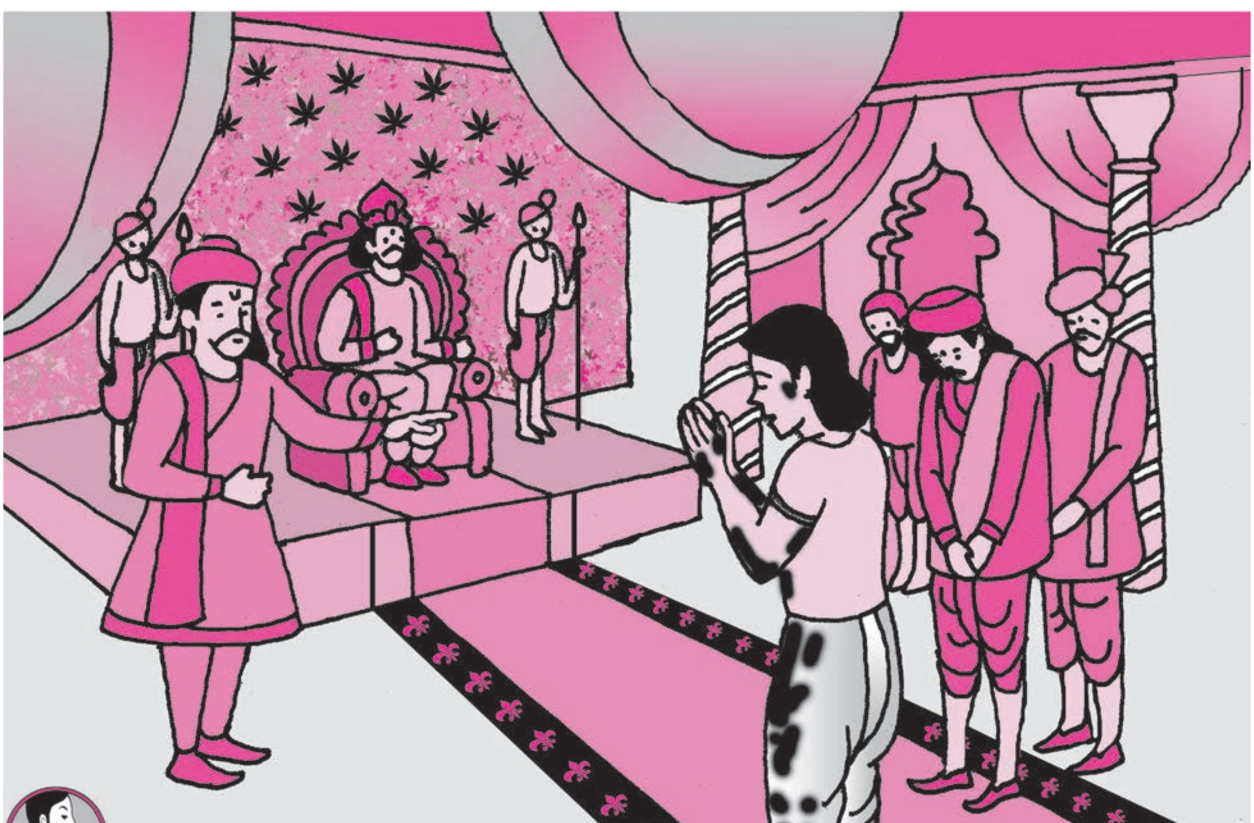

इस कहानी से क्या सीख मिलती है, बताओ ।

❑ विद्‌यार्थियों से कहानी का मौन और मुखर वाचन करवाएँ । आवश्यकतानुसार उनके उच्चारण में सुधार करें । कहानी में आए संवादों को साभिनय पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । परोपकार संबंधी अन्य कथाओं/सत्य घटनाओं पर चर्चा करें ।

● **अंतर बताओ :**

४. कश्मीरा

❑ दोनों चित्रों को ध्यान से देखकर विद्यार्थियों से इनमें दस अंतर बताने के लिए कहें । जम्मू-कश्मीर की बेटी के संबंध में जानकारी दें ।

पहचान हमारी

❑ **अध्यापन संकेत** : पहली इकाई, पाठ ५. पहचान हमारी-भाग (१) के **पृष्ठ ८ एवं ९** में वर्णमाला का आधा भाग अध्ययन-अनुभव के लिए है । शेष वर्णमाला पाठ १३. पहचान हमारी-भाग (२) के **पृष्ठ १८ एवं १९** पर दी गई है । अध्यापन संकेत समझकर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । संपूर्ण पाठ्यसामग्री का मूल उद्देश्य वर्णमाला के वर्णों (स्वर, व्यंजन) तथा मात्रा और उनके चिह्नों की पहचान करवाना है । निरंतर अभ्यास द्वारा इनका दृढ़ीकरण करवाएँ । श्रवण-वाचन का बार-बार अभ्यास एवं स्वयं अध्ययन अपेक्षित है ।

(१) पृष्ठ ८, ९, १८, १९ पर स्वर ऊपर दाहिनी ओर दिए गए हैं । इनकी मात्राएँ बड़े चित्रों द्वारा पढ़ाना अपेक्षित है ।

(२) सर्वप्रथम इन पृष्ठों पर दिए गए चित्रों का निरीक्षण करने के लिए कहें ।

(३) बड़े चित्रों और मोटे अक्षरों के माध्यम से वर्णों का परिचय करवाएँ फिर मात्राओं को समझाएँ ।

(४) पुनरावर्तन के लिए ऊपर दिए गए प्रत्येक वर्ण का क्रम बदलकर छोटे चित्रों में शब्द दिए गए हैं । ये शब्द मात्रावाले भी हैं । विद्यार्थियों को केवल वर्ण पहचानने और रेखांकित करने के लिए कहें ।

(५) प्रत्येक पृष्ठ के नए वर्णों का परिचय करवाएँ तथा उस पृष्ठ पर आए हुए स्वर और मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें, लिखवाएँ और आकलन कराएँ । 'पढ़ो' के लिए दिए गए शब्दों का सुलेखन और श्रुतलेखन करवाएँ ।

(६) प्रत्येक पृष्ठ पर नीचे दिए गए शब्द, मात्राओं को पहचानने और दिए गए वर्णों के साथ उन्हें जोड़कर पढ़ने के लिए हैं । पहली पंक्ति बिना मात्रावाली, दूसरी पंक्ति पूर्व पृष्ठ की मात्रावाली (पृ. ८ छोड़कर) तथा तीसरी पंक्ति में उसी पृष्ठ की मात्राएँ लगाकर फिर दोनों मात्राएँ साथ लगाकर कई शब्द दिए गए हैं । इन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर स्वयं पढ़ें और विद्यार्थियों से अनुवाचन करवाएँ । तत्पश्चात प्रत्येक विद्यार्थी से मुखर और मौन वाचन करवाएँ । **इन शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है ।**

● देखो और सुनो :

५. पहचान हमारी–भाग (१)

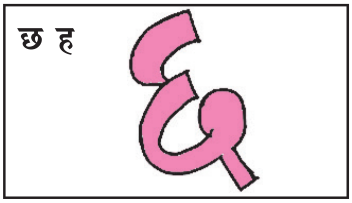

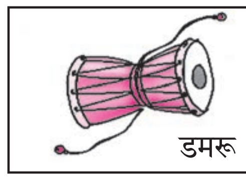

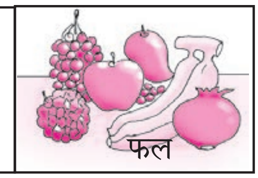

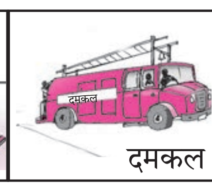

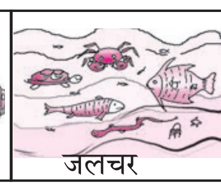

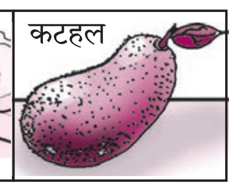

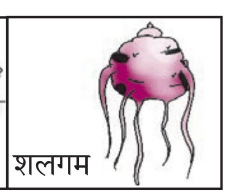

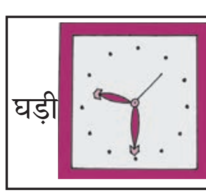

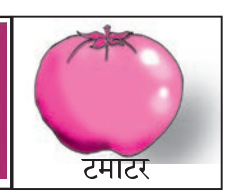

पढ़ो : डर, फर, घर, रथ, शक, शरद, शहद, दशक, आदर, कहकर, अरहर, अशरफ, अटककर, आह, डाक, छाछ, थका, कथा, हरा, आशा, आका, काका, दादा, आहार, शारदा, शाकाहार, फटकार ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन–अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ७ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर अध्ययन–अनुभव दें ।

● **देखो और सुनो :**

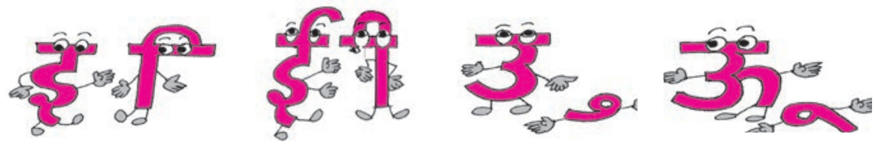

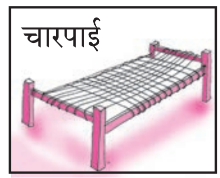

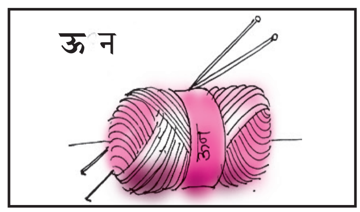

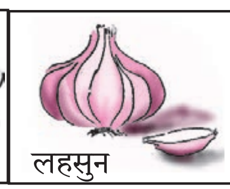

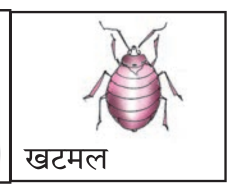

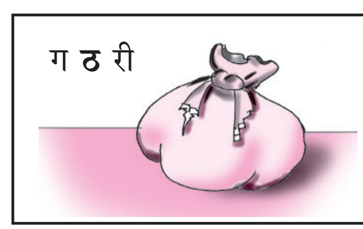

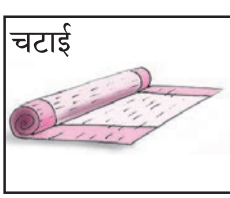

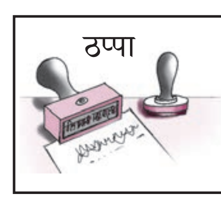

पढ़ो : यह, नख, उर, आम, गठन, शपथ, ऊपर, चमचम, हमदम, चकमक, चटपट, फड़ककर, आई, माई, इरा, रमा, ढाका, मामा, शाला, चाचा, आकाश, कपड़ा, दादरा, अचार, इकहरा, चारपाई, दीदी, चूरा, कुहू, चिड़िया, शिकारी, दीपिका, जामुन, नूपुर, दुरूह, कुरूप, गुटरू, शारीरिक, पिचकारी ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ७ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर अध्ययन-अनुभव दें ।

● **सुनो और दोहराओ :**

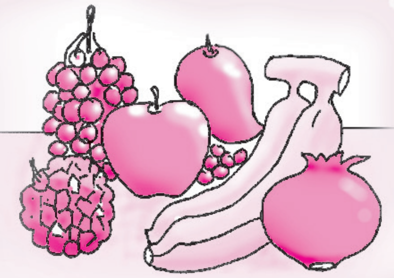

६. पेटूराम

“चलिए, भोजन तैयार है ।”
“आप भोजन कीजिए । मैं.....!”
“क्या आप भोजन नहीं करेंगे ?”
“आज मेरा उपवास है ।”
“उपवास में कुछ तो लेते होंगे ?”
“हाँ, थोड़ा बहुत खा लेता हूँ ।”
“फिर संकोच कैसा ? कृपया बताइए ।”
“अंगूर मिलते हैं ?”
“हाँ, बहुत मिलते हैं ।”
“केवल आधा किलो मँगवा लें ।”
“और ?”
“आधा दर्जन केले, एक किलो सेब ।”
“और ?”
“एक पाव मेवा, सवा पाव मिठाई ।”
“बस या कुछ और ?”
“आधा लीटर दूध और रबड़ी बस ।”
“ठीक और कोई आज्ञा ?”
“नहीं – नहीं; आज मेरा उपवास है ।
व्रत के दिन मैं अधिक नहीं खाता ।”

– डॉ. त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल

विरामचिह्नों को पहचानो, पढ़ो और समझो :

पूर्णविराम (।), अल्पविराम (,), प्रश्नवाचक (?), विस्मयादिबोधक (!), अर्धविराम (;)

१. अंगूर मिलते हैं ?
२. मैं.....!
३. आधा दर्जन केले, एक किलो सेब ।
४. नहीं – नहीं; आज मेरा उपवास है ।

❑ पाठ्यांश को उचित विराम, उच्चारण सहित सुनाएँ । विद्यार्थियों से इसका मुखर वाचन करवाकर नाट्यीकरण करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने के लिए प्रेरित करें । उन्हें सुने हुए चुटकुले सुनाने के लिए कहें । विरामचिह्नों का प्रयोग करवाएँ ।

● **देखो, सुनो और बनाओ :**

७. बधाई कार्ड

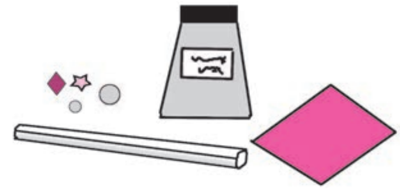

सामग्री – कागज, पुरानी साड़ी की लेस, टिकलियाँ, रंगीन काँच के छोटे-छोटे टुकड़े, कैंची, गोंद ।

कृति – बधाई कार्ड के लिए आवश्यक आकार में कागज को काटो । पुरानी साड़ी की लेस को काट कर चारों किनारों में चिपकाओ । कार्ड को आकर्षक बनाने के लिए टिकलियों और काँच के छोटे-छोटे टुकड़ों को उचित जगहों पर चिपकाओ । स्केच पेन से विविध रंगों की सजावट करो । बधाई का संदेश देखकर लिखो ।

❑ विद्यार्थियों को उनके मित्र/सहेली के जन्मदिन एवं अन्य अवसरों पर हाथ से बनाकर बधाई कार्ड भेजने के लिए कहें । बड़ों के लिए प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते और छोटों के लिए आशीष, स्नेह, प्यार जैसे शब्दों से विद्यार्थियों को परिचित कराएँ ।

● **देखो और समझो :**

८. करो और जानो

फुगड़ी खेलो ।

हँसो

पगड़ी बाँधो ।

नाचो

झाड़ू लगाओ ।

रस्सी कूदो ।

गाओ

रोटी बेलो ।

कपड़े धोओ ।

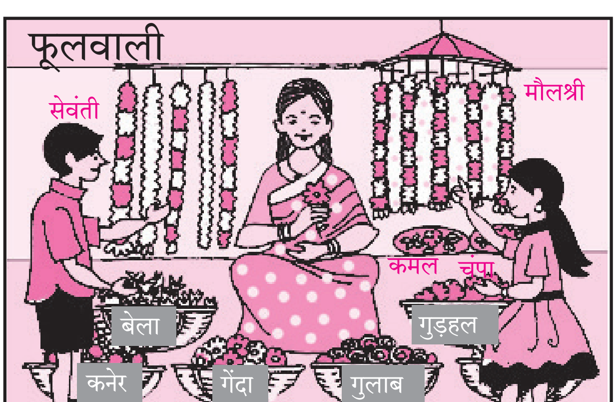

❑ विद्यार्थियों से गुट में एवं एकल रूप से दी गई कृतियों का अभिनय करने के लिए कहें । चित्रों की पहचान करवाकर विभिन्न अनाज, फूलों, फलों के नाम पूछें । किसान, डाकिया, सैनिक, नर्स, वकील के कार्यों पर चर्चा करें ।

● **सुनो और अभिनय करते हुए गाओ :**

९. नीम

ना मैं डॉक्टर, ना मैं ओझा,
ना मैं वैद्‌य-हकीम ।
मैं तो केवल एक पेड़ हूँ,
नाम है मेरा नीम ।

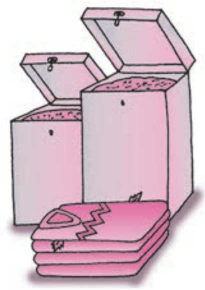

मेरी सूखी पत्ती डालो,
ऊनी कपड़े, अनाज बचा लो ।
सुखी पत्ती के धुएँ से,
मक्खी-मच्छर दूर भगा लो ।

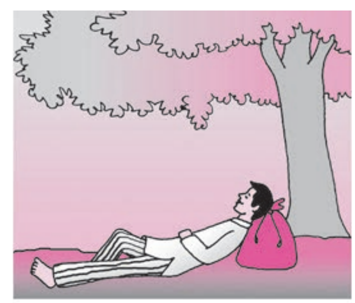

घनी पत्तियों के कारण,
शीतल है मेरी छाया ।
गरमी और थकान मिटी,
जो मेरे नीचे आया ।

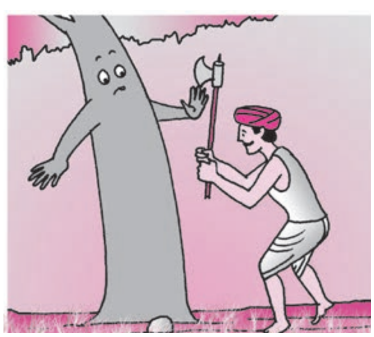

नहीं काटना मुझको तुम,
मैं इतने सुख दे देता ।
सूरज की किरणों से मिलकर,
हवा शुद्‌ध कर देता ।

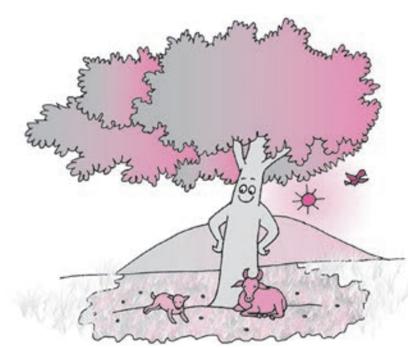

सूरज, तारे, धरती, चाँद की,
जब तक चले कहानी ।
हमेशा सबको सुख देने की,
है मैंने मन में ठानी ।

– लता पंत

कोष्ठक में दिए वर्णों से रिक्त स्थान भरो : (ड़े, णों, की, ना, मैं, थ, सू, हा, कि)

— ने, कप — , ह — म, अ — ज, — कान, —रज, क — नी, — र — ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से साभिनय मुखर वाचन करवाएँ । भूत-प्रेत, ओझा जैसे अंधविश्वास पर चर्चा करते हुए विद्‌यार्थियों को इनसे दूर रहने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहें ।

● **सुनो, दोहराओ और बताओ :**

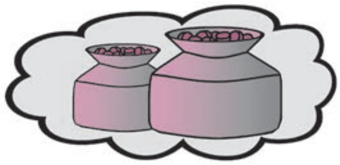

१०. गड़ा धन

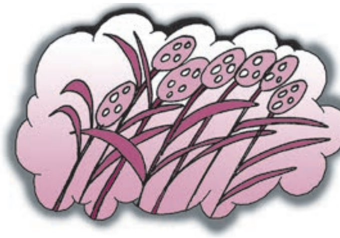

सुंदरपुर गाँव में रामदीन नामक किसान रहता था । उसके चार बेटे थे । रामदीन स्वयं तो बहुत परिश्रमी था पर उसके चारों बेटे बड़े आलसी थे । हर समय इधर-उधर बैठकर गप्पें मारा करते थे । रामदीन उनके इस अल्हड़पन से परेशान था । उसे हमेशा बेटों के भविष्य की चिंता सताया करती । वह दिन रात यही सोचा करता कि बेटे अपना पेट कैसे पालेंगे । एक रात वह इन्हीं विचारों में खोया था, तभी उसकी पत्नी ने झिझकते हुए उसे एक उपाय सुझाया । उपाय सुनकर वह कुछ देर सोचता रहा । फिर एकाएक खुशी से उछल पड़ा ।

अगली सुबह रामदीन ने अपने चारों बेटों को बुलाकर कहा, ''मैं और तुम्हारी माँ अब बूढ़े हो गए हैं । हम दूर तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं । मैंने खेत में धन गाड़कर छिपा रखा है । यदि कोई जरूरत पड़े तो उसे निकालकर उपयोग कर लेना ।'' गड़े हुए धन की बात सुनकर बेटे खुश हो गए और उन्होंने अपने पिता जी को खुशी-खुशी तीर्थयात्रा पर जाने के लिए कह दिया । वे मन-ही-मन खुश हो गए कि अब कुछ दिनों तक पिता जी का बंधन भी उनपर नहीं होगा ।

रामदीन के जाने के बाद कुछ दिनों तक तो सब कुछ सामान्य चलता रहा पर उसके बाद

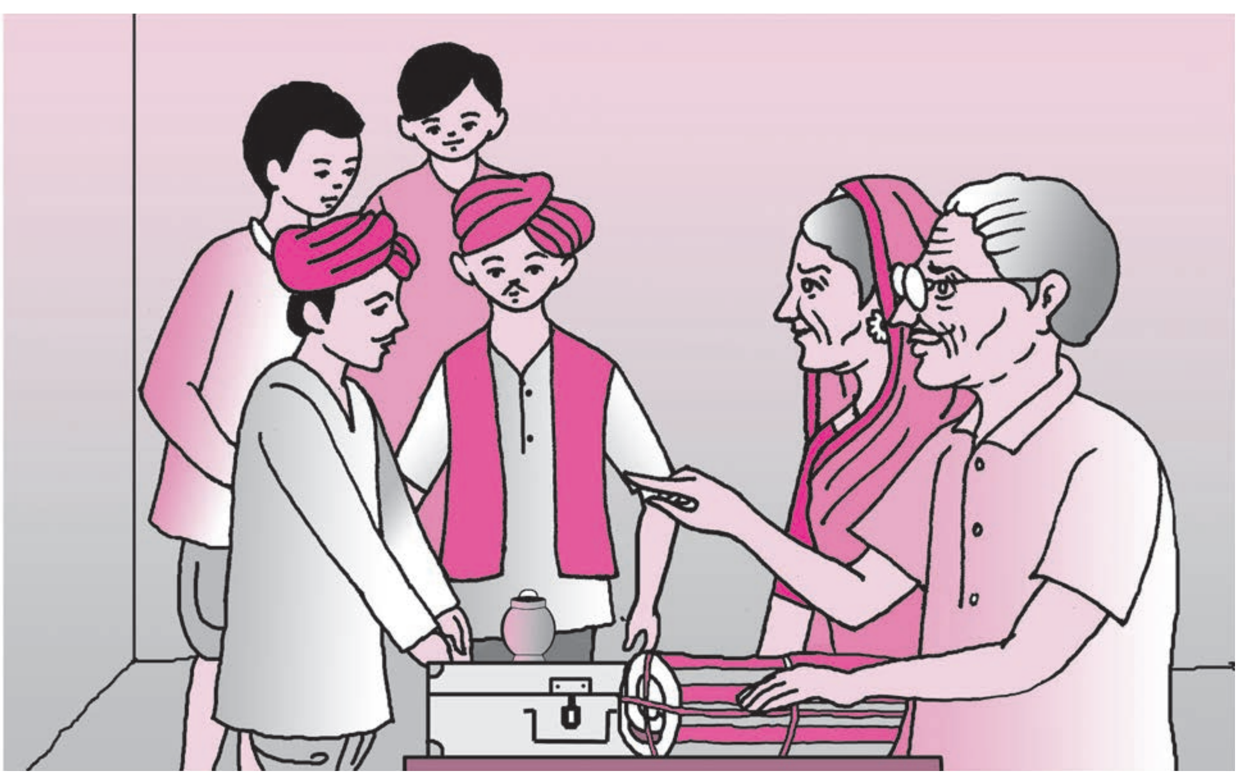

❑ विद्‌यार्थियों को कहानी सुनाएँ और दो-दो पंक्तियों का मुखर वाचन करके दोहरवाएँ । प्रश्न पूछें और उनसे उत्तर प्राप्त करें । श्रम के महत्त्व को समझाएँ । मित्रता संबंधी कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्‌यार्थियों से फसलों के नाम कहलवाएँ ।

पास का धन और घर का धान्य समाप्त होने लगा । अब चारों भाइयों को चिंता हुई । उन्हें अपने पिता जी की कही बात याद आ गई कि जरूरत पड़ने पर खेत में गड़ा धन निकाल लेना । उन्होंने रात के समय खेत की खुदाई का काम आरंभ किया । वे दो-तीन रातें खेत को खोदते रहे, पर कहीं भी उन्हें गड़ा हुआ धन नहीं मिला। रात भर के परिश्रम से वे बहुत थक गए थे । जब सुबह बहुत निराश और हताश होकर वे चारों अपने घर लौट रहे थे, तभी रामदीन के परम मित्र हरिनाथ ने पूछा, '' तुम सब थके हुए क्यों हो ?'' कारण जानने के बाद हरिनाथ ने उन चारों को एक सलाह देते हुए कहा, ''तुम लोगों ने खेत तो खोद ही लिया है, अब उसमें बीज बो दो ।'' चारों भाइयों के उदास चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई । उन्होंने हरिनाथ के कहे अनुसार ही किया ।

खेत में नन्हे-नन्हे अंकुर निकल आए । उन चारों के मन में उत्साह जाग गया । वे निराई-गुड़ाई करने लगे । फसल बहुत अच्छी हुई । हरिनाथ काका को धन्यवाद देकर वे फसल को बाजार में बेचने के लिए ले जाने की तैयारी में जुट गए । उसी समय तीर्थयात्रा से रामदीन और उसकी पत्नी लौट आए । माता-पिता के आते ही बेटों ने उनके चरणस्पर्श किए । गाड़ी में लदे फसल के बोरे देखकर रामदीन ने कहा, ''अब तुम्हें खेत में गड़े धन का राज समझ में आ गया होगा ।'' चारों ने सिर हिलाकर स्वीकार किया और कहा, ''हाँ, पिता जी ! अब हम यह भी समझ गए हैं कि जीवन में परिश्रम के बिना कुछ भी संभव नहीं है । परिश्रम से ही धन पाया जा सकता है ।''

सुनो, समझो और उत्तर लिखो :

(क) रामदीन परेशान क्यों था ?

(ख) तीर्थयात्रा पर निकलने के समय रामदीन ने बेटों से क्या कहा ?

(ग) चारों भाइयों को पिता जी की कौन-सी बात याद आई ?

(घ) चारों भाइयों के मन में उत्साह कब जागा ?

❑ पाठ में आए विरामचिह्नों का प्रयोग निबंध, संवाद या अन्य विधा में करवाएँ । विद्यार्थियों को बिना विरामचिह्नवाले परिच्छेद देकर उचित विरामचिह्न लगाने के लिए कहें । इनका दृढ़ीकरण होने तक विद्यार्थियों से बार-बार अभ्यास कराएँ ।

● **सुनो, समझो और बोलो :**

११. मित्रता

(खेल के मैदान में बातचीत करते हुए बच्चे ।)

अर्नाल्ड : नमस्ते ! मेरा नाम अर्नाल्ड है । मैं छतरी तालाब के सामने रहता हूँ ।

तबस्सुम : मित्रो ! मेरा नाम तबस्सुम है । मैं पाठशाला के समीप रहती हूँ ।

क्षमा : सुनो ! मैं क्षमा हूँ । बाजार के पास रहती हूँ ।

विहंग : नमस्ते ! मैं विहंग, बस स्टैंड के पीछे रहता हूँ ।

अर्नाल्ड : मेरे घर में दादा जी, माता जी, पिता जी और छोटी बहन हैं ।

तबस्सुम : मेरे घर में माता जी, पिता जी और बुआ जी रहती हैं । बुआ जी हमें ज्ञान-विज्ञान की रोचक कहानियाँ सुनाती हैं ।

विहंग : मेरे पिता जी वकील हैं । वे न्यायालय के किस्से सुनाते हैं ।

अर्नाल्ड : मेरी माता जी सरकारी अस्पताल में नर्स हैं । तुम्हारी माता जी क्या करती हैं ?

क्षमा : मेरी माता जी सरपंच हैं । कल मेरी बहन का जन्मदिन है, तुम सब जरूर आना ।

तबस्सुम : हाँ-हाँ, जरूर । मैं तुम्हारी मदद के लिए जरूर आऊँगी ।

विहंग : आज से हम सब अच्छे मित्र हैं ।

संवाद सुनकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

१. छतरी तालाब के सामने रहता हूँ ।- तबस्सुम   ३. मेरे पिता जी वकील हैं । - क्षमा

२. रोचक कहानियाँ सुनाती हैं । - अर्नाल्ड   ४. मेरी माता जी सरपंच हैं । - विहंग

❑ विद्यार्थियों को सही उच्चारण के साथ संवाद सुनाएँ । उनको एक-दूसरे से प्रश्न पूछने और उत्तर देने के लिए कहें । उन्हें इसी प्रकार अपने पड़ोसी का परिचय देने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे उनकी संभाषण क्षमता बढ़ेगी । अपने से बड़ों के लिए आदरसूचक शब्दों (आप, जी, हैं) का प्रयोग समझाएँ और अभ्यास करवाएँ । संभाषण और लेखन में आदरसूचक शब्दों के उचित प्रयोग पर ध्यान दें ।

● **सोच समझकर दैनिक उपयोग करो :**

१२. बचत

अन्न, जंगल, बिजली, पानी–है सभी बचाना ।
पैसों की बचत करो–जीवन को है सजाना ।

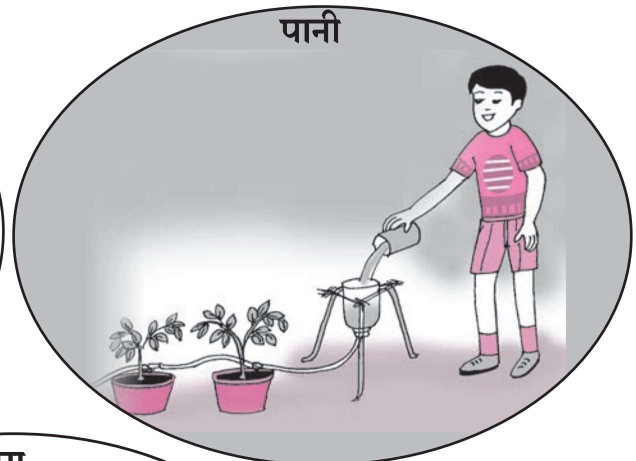

❑ चित्रों का निरीक्षण करवाएँ । विद्यार्थियों से अन्न, कागज, बिजली, पानी आदि के उपयोग पर चर्चा करें । इनकी बचत करने हेतु उन्हें प्रेरित करें । बचत कैसे हो सकती है, बताएँ । 'यदि पानी न हो तो क्या होगा', इसपर समूह में चर्चा करवाएँ ।

● देखो और सुनो :

१३. पहचान हमारी – भाग (२)

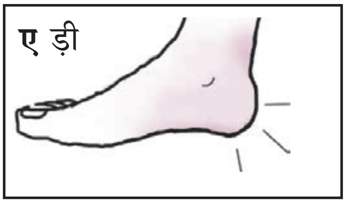

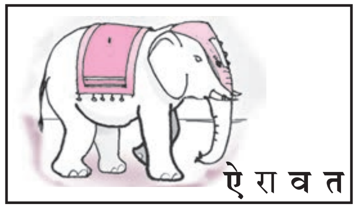

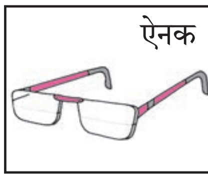

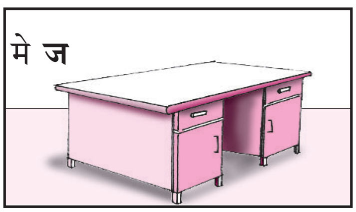

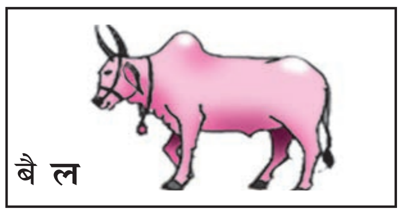

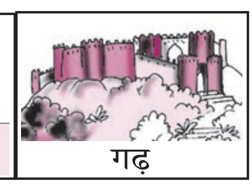

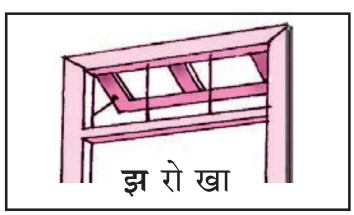

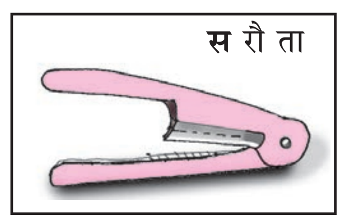

पढ़ो : जल, एक, गढ़, वह, ओर, और, कमल, करतल, अनपढ़, जगमग, अचरज, आजकल, ऐसा, काला, पीला, झाड़ी, लीची, चातक, अज्ञात, एकता, पपीता, सुदूर, शहतूत, अनुसूची, कुतूहल, मेवे, जैतून, थैले, टोपी, दौड़ो, तौलो, कचौड़ी, कैकेयी, वैदेही, शैलेश, कैनेडी, चौकोर, नौरोजी, चौकोन ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ७. पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर अध्ययन-अनुभव दें ।

● **देखो और सुनो :**

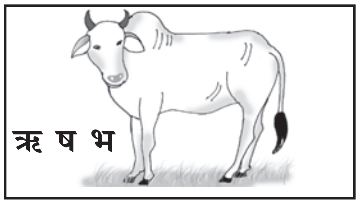

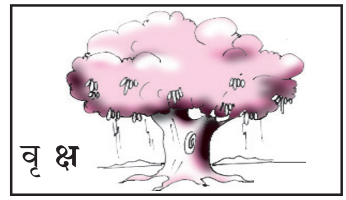

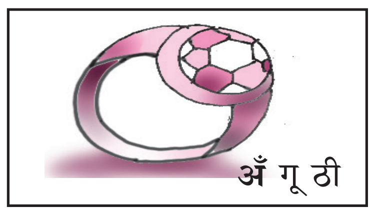

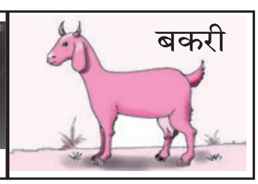

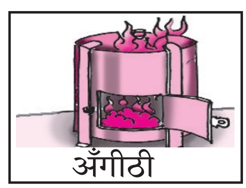

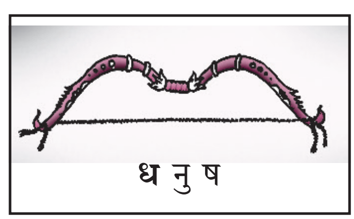

अ:

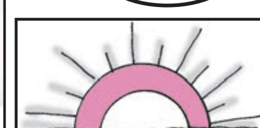
प्रातः

ङ

ञ ळ

पढ़ो : तब, क्षण, अंग, श्रम, धन, मठ, सत्र, ऑन, ऑफ, आँख, अतः, नमः, नयन, ऋषभ, बॉल, हॉल, बौनों, बाजरा, तालाब, बिहारी, बेचैन, त्रिवेणी, अमृत, चूड़ियाँ, अनुकूल, वाङ्मय, षटकार, बंटी, कंघा, अंडा, पंप, पंख, कंठ, पंछी, अंजीर, अंकिता, अचंभा, अंगूर, बंधन, गुंफन, झंझावात, पंढरपुर ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ७ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर अध्ययन-अनुभव दें ।

● **पढ़ो और समझो :**

१४. मैं सड़क हूँ

मैं सड़क हूँ । सब मुझ पर चलते हैं । आदमी, रिक्शा, बस, साइकिल सभी मुझ पर इधर से उधर आते-जाते हैं । बालक, जवान, बूढ़े सभी के काम आती हूँ । मैं घर और विद्‌यालय के बीच सेतु हूँ । लोग मेरे किनारे मकान बना लेते हैं । सामान बेचने वाले भी मेरे दोनों ओर दुकानें लगाते हैं । चौराहे पर पुलिस का सिपाही वर्दी पहने खड़ा होता है । वह यातायात को अनुशासित रखता है । रास्ता बदलने के लिए कई बार लोगों को मुड़ना पड़ता है पर इसमें मेरा दोष नहीं है । मैं तो सदा सीधी चलने के लिए तैयार हूँ । लोग अपनी जरूरत से कभी मुझे टेढ़ी, नीची और ऊँची बना देते हैं ।

मेरा आरंभिक स्वरूप कच्चा था । उसपर बैलगाड़ी, ताँगा, ऊँटगाड़ी जैसे वाहन चलते थे फिर कोलतार डालकर पक्की सड़कें बनने लगीं । आजकल नई तकनीक आ गई है । इस तकनीक में मुझे सीमेंट से बनाने लगे हैं। अपना यह नया रूप बहुत अच्छा लगता है । दुख उस समय होता है जब लोग गंदा कर देते हैं । लोग पान खाते हैं । बिना सोचे-समझे जहाँ जी में आया मुझ पर थूक देते हैं । लोग जगह-जगह मुझे खोदकर गड्‌ढे बना देते हैं । इससे मेरे शरीर पर बहुत से घाव हो जाते हैं । गड्‌ढों के कारण अनेक दुर्घटनाएँ होती हैं फिर भी न जाने लोग ऐसा क्यों करते हैं ? मैं सदा साफ-सुथरी रहना चाहती हूँ । सबको रास्ता दिखाना चाहती हूँ । मेरे कारण देश में दूर-दूर रहने वाले लोग एक-दूसरे से आसानी से मिल पाते हैं । मैं जहाँ जाती हूँ, वह परिसर विकसित हो जाता है । मैं चाहती हूँ कि हर गाँव को एक-दूसरे से जोड़ूँ, लोगों में मेल-जोल बढ़ाऊँ । पूरे देश में खुशहाली लाऊँ । विश्वास है कि एक दिन मेरी इच्छा निश्चित ही पूरी होगी ।

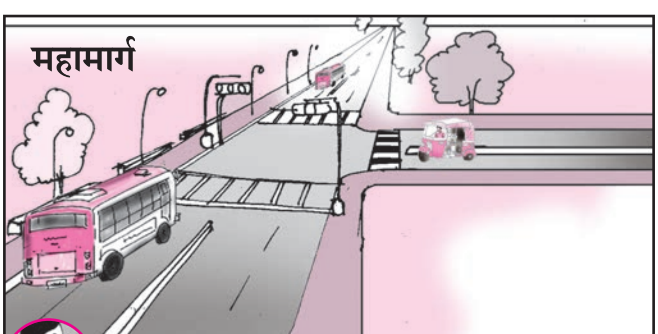

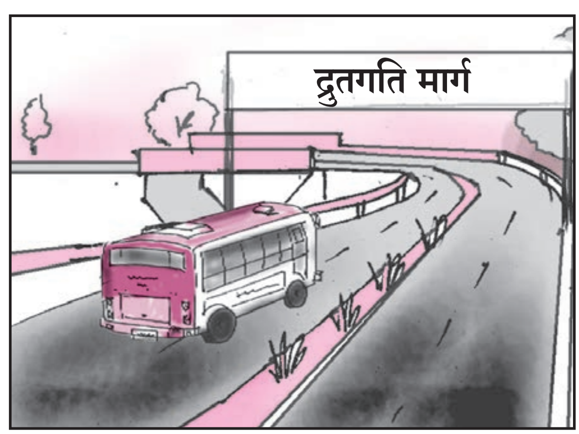

१. अंत्याक्षरी खेलो :

सड़क....किनारे....रास्ता....तकनीक....काम....मकान....निकिता....ताँगा....गाजर.....रश्मि।

२. सड़क कैसे साफ-सुथरी रख सकते हैं, बताओ ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें और अनुवाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों से अपने बारे में पाँच वाक्य कहलवाएँ । पगडंडी, कच्ची सड़क, पक्की सड़क पर चर्चा कराएँ । नदी, उद्‌यान आदि की आत्मकथा प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

● **कृति करो :**

१५. व्यायाम

विश्राम की मुद्रा में खड़े रहो ।

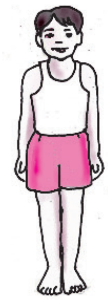

सावधान की मुद्रा में खड़े रहो ।

एक पैर पर खड़े हो जाओ ।

अपने हाथ पीठ के पीछे से पकड़कर आगे झुको ।

दोनों हाथ फैलाकर पीछे झुको ।

झुककर दाहिना हाथ बाएँ पैर के अँगूठे पर और बायाँ हाथ ऊपर करो ।

अपने दोनों पैरों के अँगूठे छुओ ।

दोनों हाथ ऊपर करके पैर के पंजों पर खड़े हो जाओ ।

बायाँ हाथ सामने रखकर उसे धीरे-धीरे बाईं ओर ले जाते हुए अँगूठे का नाखून देखो ।

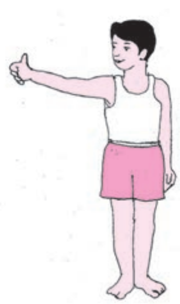

दायाँ हाथ दाईं ओर ले जाते हुए अँगूठे का नाखून देखो ।

घुटनों पर बैठकर दोनों हाथों से पैरों की उँगलियाँ पकड़ो ।

बैठकर पैर सीधे करो । दोनों हाथों से पैर की उँगलियों को पकड़ो ।

❑ सभी कृतियाँ विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । व्यायाम के महत्त्व और आवश्यकता पर चर्चा करें ।

● **देखो, समझो और मातृभाषा में बताओ :**

१६. बोलो और जानो

अमरूद

गुब्बारा
घर

बस्ता

बेला
पानी

गुड़िया

यह कुत्ता है ।

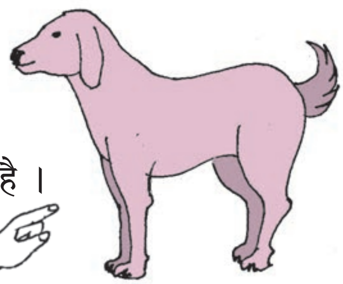

वह पुस्तक है ।

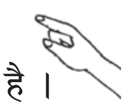

हवाई जहाज

कलम

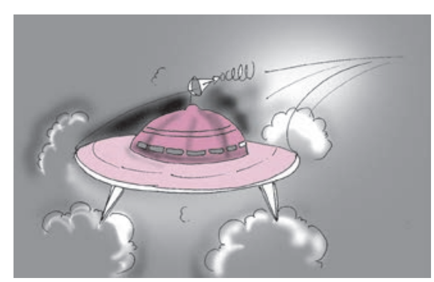
उड़नतश्तरी

मूँछ

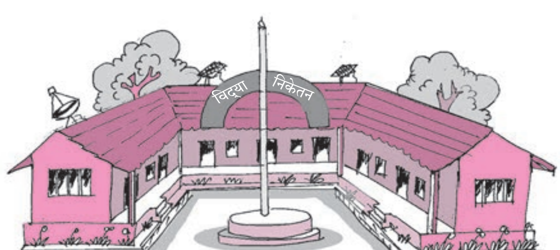

विद्यालय

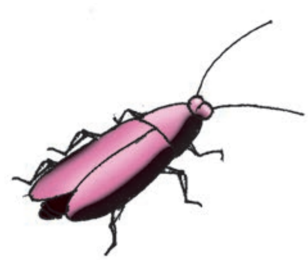
तिलचट्टा

❑ ऊपर दिए गए चित्रों की पहचान कराएँ । विद्यार्थियों से चित्रों के नाम मातृभाषा में बताने के लिए कहें । हिंदी के अन्य शब्दों, वाक्यों का अनुवाद कहलवाएँ । हिंदी और मराठी में समान अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों पर चर्चा करें और अन्य शब्द कहलवाएँ । निकट/दूर दर्शाने के लिए 'यह' और 'वह' शब्दों का प्रयोग विद्यार्थियों को समझाएँ एवं उचित उदाहरण देकर अभ्यास करवाएँ ।

* स्वयं अध्ययन *

१. बिंदुओं को जोड़कर रंग भरो और पूरी वर्णमाला क्रम से बोलो :

२. चित्रों और मात्रा/चिह्नों की उचित जोड़ी मिलाओ (वर्ण–प) :

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ

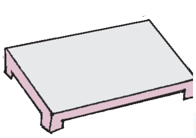

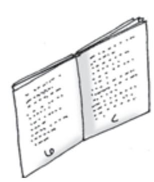

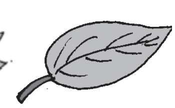
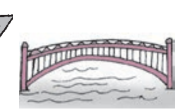

५
प्रात:

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अ:	अँ	ऑ

* पुनरावर्तन-१ *

१. **सुनो और दोहराओ :**

बन-वन, पर-फर, उन-ऊन, आधा-सादा, कार-खार, सात-साथ, गृह-ग्रह, वाणी-पानी, मेघा-मेधा, ऋचा-कृपा, शेर-सेर, चरण-चारण, कपड़ा-डबरा, लोरी-लॉरी, शाप-साँप, उधार-उघाड़, सरपट-सरपत ।

२. **तुम अपने पड़ोस के बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हो, बताओ ।**

३. **अनुरेखन करो और पढ़ो :**

धागा, कमल, खिलाड़ी, पुदीना, रुपया, नूपुर, हृदय, गिरगिट, बाबा

४. **दिए गए प्राणियों और उनके घर की उचित जोड़ी मिलाओ :**

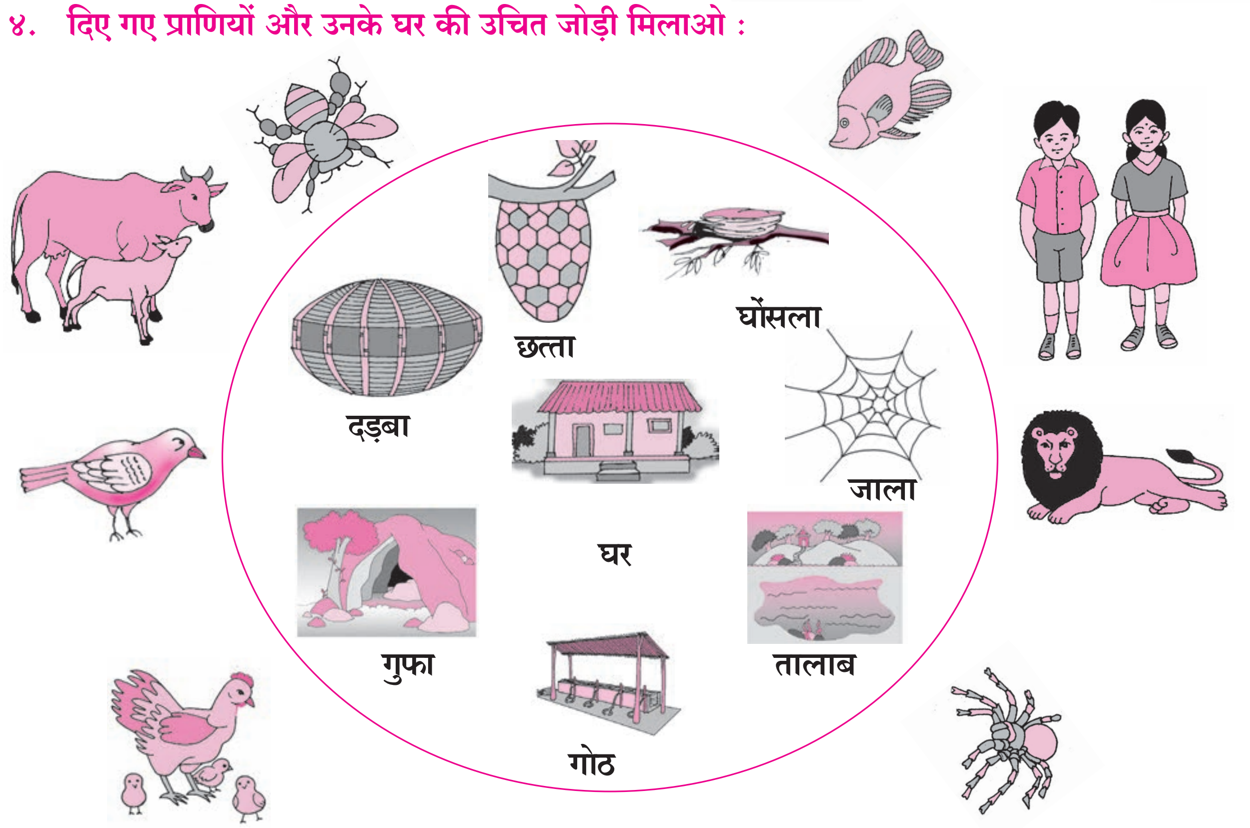

५. **तुम्हारे बनाए हुए रेत के घरौंदे को किसी ने तोड़ दिया तो तुम क्या करोगे ।**

कृति/उपक्रम

परिसर के कार्यक्रम में पहेलियाँ/ चुटकुले सुनाओ ।	अतिथि आने पर अपना और अपने परिवार का परिचय दो ।	प्रति सप्ताह परिसर में लगी तख्तियों से मात्रावाले शब्द पढ़ो ।	समाचारपत्र में छपे बिना मात्रावाले वर्णों के नीचे रेखा खींचो ।

* पुनरावर्तन-२ *

१. **सुनो और दोहराओ :**

बैल-बेल, ढाल-गढ़, ओज-भोज, रंग-रग, तमिळ-कमल, साड़ी-कढ़ी, छत-छत्र, विज्ञान-विज्ञापन, रिपु-ऋतु, गौरी-कसौटी, झाँझ-साँझ, चाभी-दीया, हाल-हॉल, साल-शॉल, तृण-हृदय, पेड़-डमरू ।

२. **परीक्षा के समय अचानक तुम्हारा पेन खराब हो जाए तो तुम क्या करोगे ?**

३. **अनुरेखन करो और पढ़ो :**

क्षमा, शहर, गृह, गैरेज, अतः, बॉल, पैसे, चोटी, मुँह, गेरूआ

४. **ध्यान से देखो और पत्तों के आधार पर पौधों/वृक्षों के नाम हिंदी और मराठी में लिखो :**

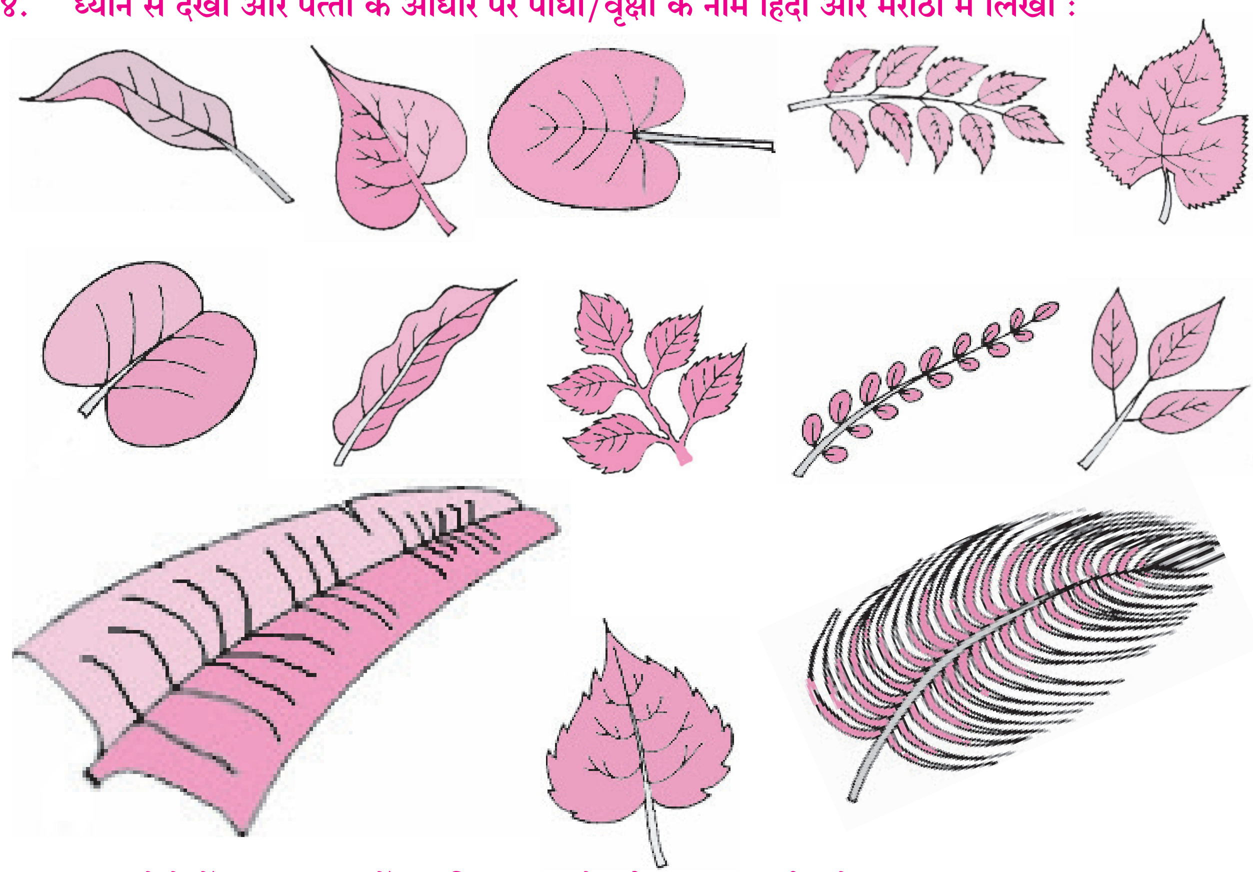

५. **पुस्तक मेले में जाकर पुस्तकों का निरीक्षण करो और उनपर चर्चा करो ।**

कृति/उपक्रम

रेडियो/दूरदर्शन पर सुने हुए विज्ञापन सुनाओ ।	यदि तुम्हें पंख लग जाएँ तो तुम क्या-क्या करोगे, बताओ ।	प्रति सप्ताह अपनी पसंद के चित्र लेकर चित्रवाचन करो ।	समाचारपत्र और दिनदर्शिका के मात्रावाले दस शब्द लिखो ।

● देखो और बताओ :

१. गाँव और शहर

❑ गाँव और शहर के चित्र दिखाकर शब्द, वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें । प्रश्नोत्तर द्‌वारा दोनों की जानकारी दें । प्रश्न पूछकर सुनिश्चित करें कि उन्होंने विषय को समझा है । विद्‌यार्थियों के दो समूह बनाकर उनसे गाँव और शहर की विशेषताएँ कहलवाएँ ।

दूसरी इकाई

शुद्ध हवा-पानी का तंत्र, स्वस्थ जीवन का मंत्र ।

अनुशासन के साथ, देश का विकास ।

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्रों में आए वाक्यों पर चर्चा कराएँ । गाँव-शहर की स्वच्छता और अनुशासन के बारे में बताएँ ।

● **पढ़ो और गाओ :**

२. जीवन

जीवन है चलने का नाम ।
करना कभी नहीं विश्राम ।।

घड़ी सदा टिक-टिक करती,
रुकने का नहीं लेती नाम ।
घड़ीनुमा सब आगे बढ़ना,
सूरज-सा नित ऊपर उठना ।
कण-कण में अपनत्व देखकर,
सबको दिल से करो प्रणाम ।।

लहराना सागर से सीखो,
आसमान-सा हृदय विशाल ।
सहनशील बन धरती जैसे,
मिलजुल करते जाना काम ।
जो चलता वह आगे बढ़ता,
मेहनत कर पाता पद नाम ।।

माँ जैसी हो मीठी बोली,
मन में सच्चे उच्च विचार ।
अपने जैसा सबको जानो,
सेवा से कर लो सुविचार ।
जीवन है चलने का नाम,
करना कभी नहीं विश्राम ।।

– डॉ. कुलभूषणलाल मखीजा

१. अपनी दिनचर्या बनाओ और सुनाओ ।
२. तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए क्या-क्या करती हैं, बताओ ।

❑ विद्‌यार्थियों को साभिनय गीत सुनाएँ और उनसे दोहरवाएँ । सामूहिक अभिनय के साथ गाने के लिए कहें । लयात्मक शब्दों का अनुवाचन कराएँ । कविता की लयात्मकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उचित लय में गीत गवाएँ ।

● **पढ़ो और समझो :**

३. भाई-भाई का प्रेम

मनोहरपुर नामक एक सुंदर गाँव था । गाँव की मिट्‌टी बहुत उपजाऊ थी । अतः गाँव के अधिकांश लोग खेती किया करते थे । इसी मनोहरपुर में दो भाई रहते थे । दोनों किसान थे । उनके घर अलग-अलग थे पर दोनों में बड़ा प्रेम था । दोनों भाई हमेशा एक-दूसरे की भलाई की बात सोचा करते थे ।

इस वर्ष पूरे गाँव में फसल अच्छी हुई थी । कटाई हो चुकी थी । खलिहान में सबके अनाज के ढेर लगे थे । एक दिन रात में बड़ा भाई लेटे-लेटे सोचने लगा, 'मेरे दो बच्चे हैं । वे गृहस्थी में मेरी कुछ-न-कुछ मदद करते ही हैं । मेरे छोटे भाई के बाल-बच्चे नहीं हैं । उसे सारा काम अकेले ही सँभालना पड़ता है । इसलिए मुझे उसकी सहायता करनी चाहिए ।' यह सोचकर वह उठा और खलिहान में गया ।

खलिहान में अपने अनाज के ढेर से उसने दस गठरी अनाज बाँधा । उनमें से एक गठरी सिर पर रखकर छोटे भाई के ढेर की ओर बढ़ा ।

ठीक उसी समय छोटा भाई भी अपने घर में बैठा सोच रहा था, 'मैं जवान हूँ । जितना चाहे उतना काम कर सकता हूँ, जहाँ चाहूँ

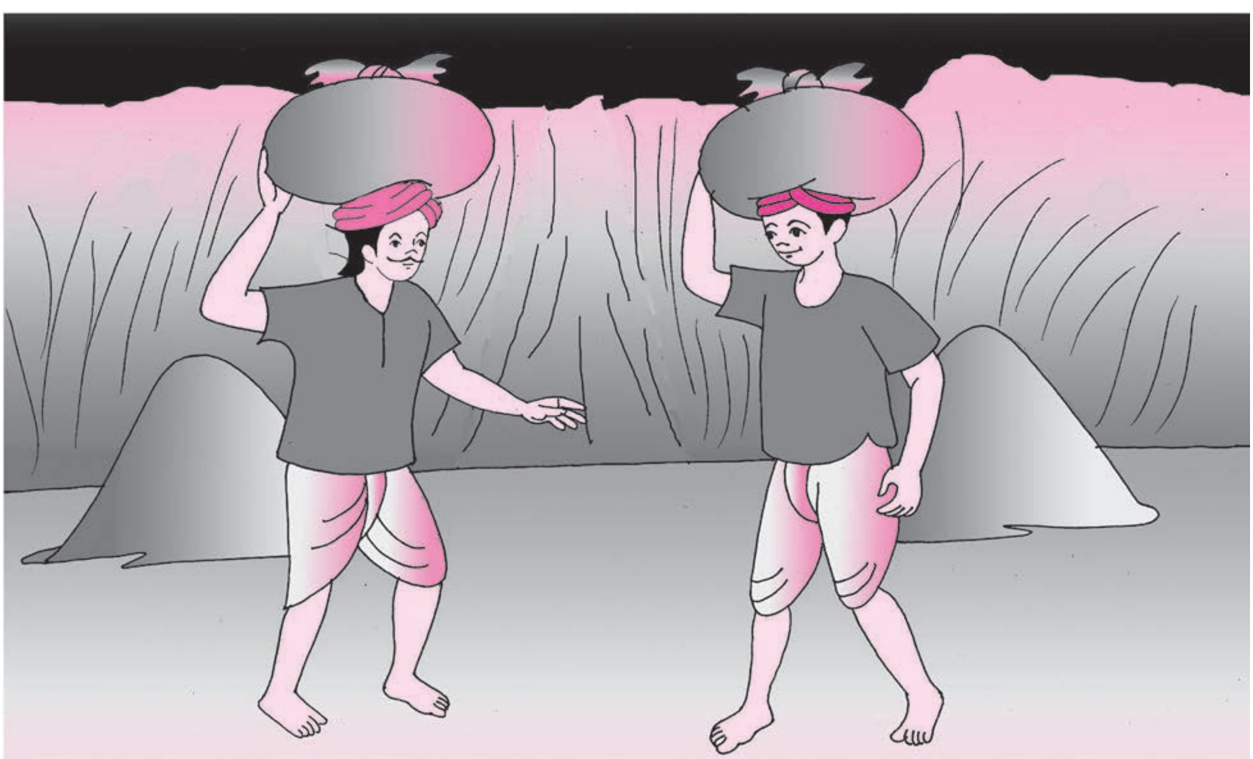

❑ विद्‌यार्थियों को कहानी उचित हाव-भाव और उच्चारण के साथ सुनाएँ । कहानी छोटे-छोटे अंशों में बाँटकर दोहरवाएँ । पाठ में आए प्रसंगों पर चर्चा करें । उनसे सामूहिक, गुट में एवं एकल वाचन करवाएँ । 'दूसरों को देने' की खुशी पर उनसे चर्चा करें ।

जा सकता हूँ । किसी कारणवश यदि खेती में फायदा नहीं हुआ तो कोई दूसरा काम कर लूँगा । हमारा खर्च कम है लेकिन मेरे बड़े भैया तो बाल-बच्चेवाले हैं । घर गृहस्थी के खर्च अधिक हैं । इसलिए मुझे उनकी सहायता करनी चाहिए ।' वह भी उठा और खलिहान में गया ।

खलिहान में अपने अनाज के ढेर में से उसने भी दस गठरी अनाज बाँधा । उनमें से एक गठरी सिर पर उठाकर बड़े भाई के ढेर की ओर बढ़ा ।

अँधेरी रात थी । हाथ को हाथ भी दिखाई न देता था । इस वातावरण में दोनों भाई धीरे-धीरे एक-दूसरे के अनाज के ढेर की ओर बढ़ रहे थे । अचानक वे एक-दूसरे से टकरा गए । दोनों चौंककर एक साथ बोले, ''कौन है ?''

दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को देखा । उनके सिर पर अनाज की गठरियाँ थीं । दोनों समझ गए ।

बड़े भाई ने कहा, ''छोटे ! तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं है । खेती का सारा काम तुम्हें अकेले सँभालना पड़ता है । मैंने सोचा कि तुम्हारे पास अनाज अधिक होगा तो अधिक दिन तक घर चलेगा इसलिए मैं खलिहान से अनाज तुम्हारे ढेर में डालने जा रहा था ।'' ''भैया ! आप बाल-बच्चेवाले हैं । आपके खर्च अधिक हैं । आपको अधिक मात्रा में अनाज की आवश्यकता होती है इसलिए मैं खलिहान से अनाज आपके ढेर में डालने जा रहा था ।''

अपनी बात कहते-सुनते दोनों भाइयों की आँखें भर आईं । दोनों रोते हुए एक-दूसरे के गले लग गए ।

दोनों भाइयों के प्रेम की यह कहानी आज भी लोग भाव विभोर होकर सुनते-सुनाते हैं ।

पढ़ो और समझो :

१. सप्रेम – प्रेम – प्रेमभरा ।   २. प्रतिदिन – दिन – दैनिक ।
३. विज्ञान – ज्ञान – ज्ञानी ।   ४. अदृश्य – दृश्य – दृश्यमान ।

❑ विद्‌यार्थियों को उदाहरण द्‌वारा उपसर्ग और प्रत्यय समझाएँ । पाठ्‌यपुस्तक से उपसर्ग, प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर कहलवाएँ । इन शब्दों की सूची बनवाएँ । भाषाई खेल के माध्यम से दृढ़ीकरण करवाएँ । उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनवाएँ ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

४. बालिका दिवस

(सब बच्चे दूर्वा के घर खेलने के लिए एकत्रित हुए हैं । वहाँ चाची जी और बड़े भैया भी हैं ।)

दूर्वा – सृष्टि, आज तो तुम बहुत बन-ठनकर आई हो ।

सृष्टि – आज तीन जनवरी बालिका दिवस है ना !

प्राची – अरे हाँ ! कल बहन जी ने बताया था कि सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन 'बालिका दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

चाची जी – सावित्रीबाई फुले महाराष्ट्र की प्रथम शिक्षिका मानी जाती हैं । अपने पति महात्मा जोतीबा फुले के साथ मिलकर उन्होंने लड़कियों के लिए पुणे में पहली पाठशाला शुरू की थी ।

जिशान – आजकल तो लगभग सभी लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं । पढ़ाई-लिखाई और अन्य क्षेत्रों में खूब आगे हैं ।

मंत्र – हाँ-हाँ, आज समाजसेवा, शिक्षा, विज्ञान, संगीत, प्रशासन, शोधकार्य, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे बढ़ रही हैं ।

सृष्टि – मेरी माँ बताती हैं कि शिक्षा हमें स्वावलंबी और सजग बनाती है ।

भैया – कहा जाता है, एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है ।

प्राची – हाँ ! इसलिए हम सबको खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए ।

सभी – खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे ।

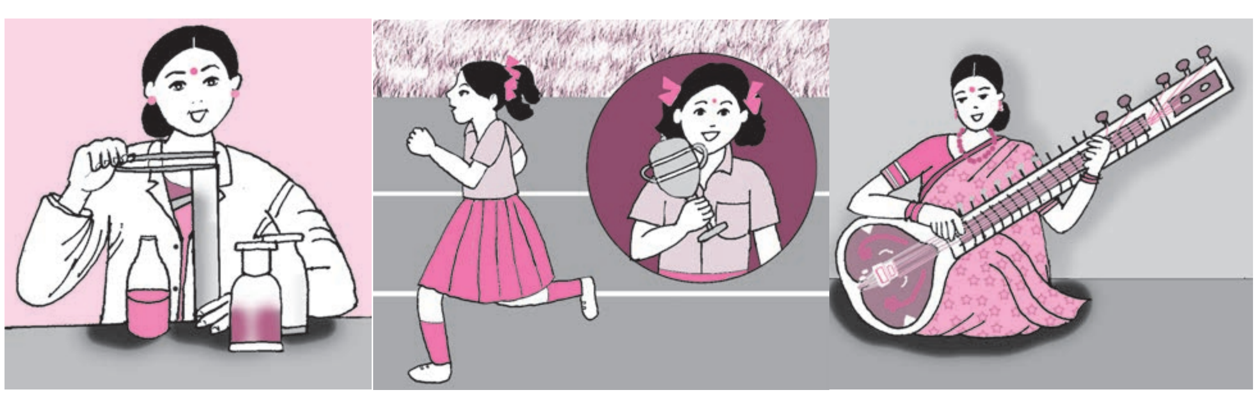

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । मुखर और मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । उन्हें अपने पड़ोस के परिवार के सदस्यों की जानकारी देने के लिए कहें । पड़ोसियों का महत्त्व बताएँ ।

● **अनुरेखन करो :**

५. रोबोट

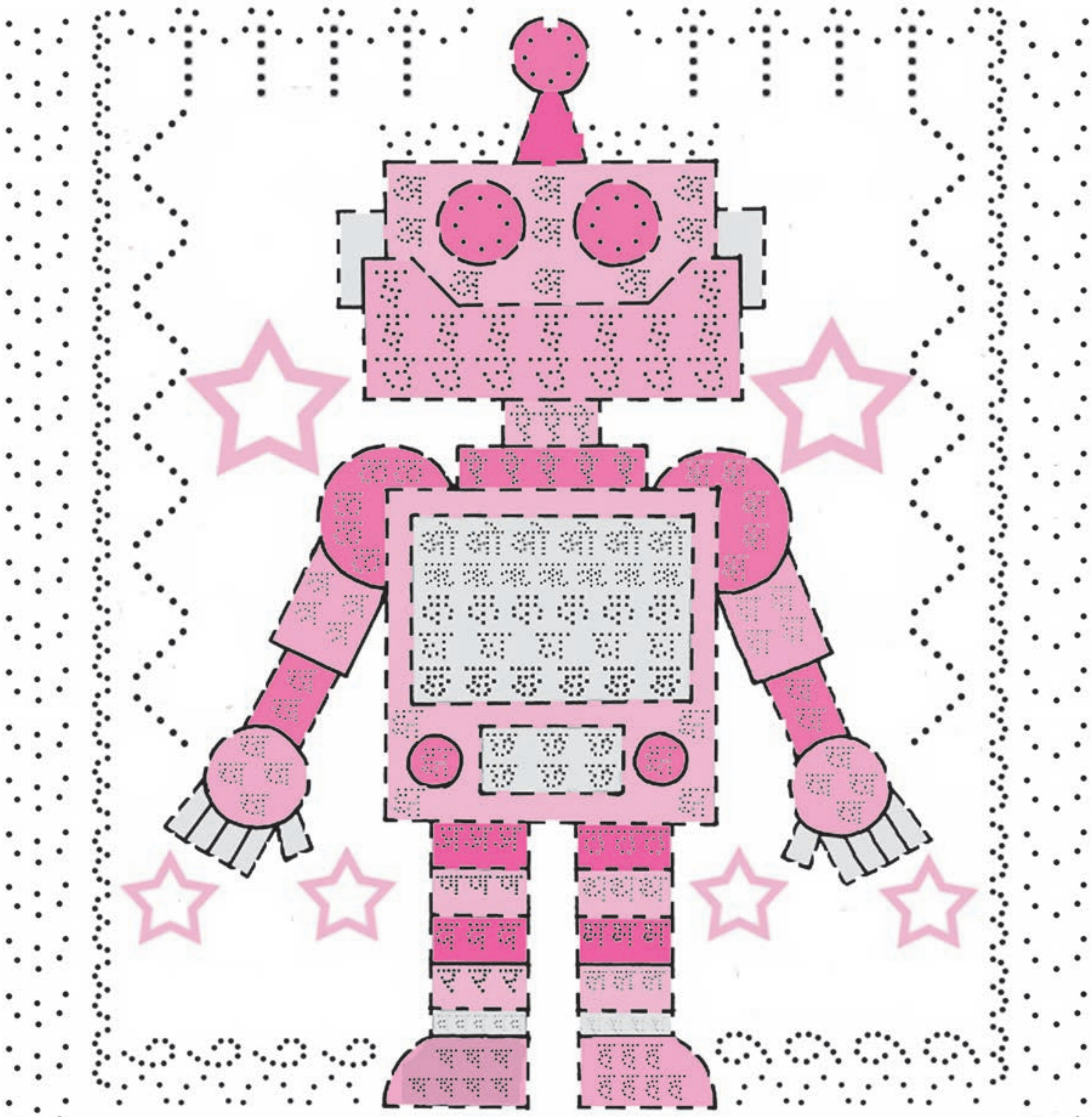

❑ रोबोट में वर्ण के अवयव एवं वर्ण दिए गए हैं । उनका अनुरेखन करवाएँ । इसी प्रकार सभी वर्णों का लेखन करने के लिए प्रेरित करें ।

जुड़ें हम

❑ **अध्यापन संकेत : पृष्ठ ३३ और ३४** पर दी गई संपूर्ण पाठ्यसामग्री का उद्देश्य संयुक्ताक्षरों की पहचान करवाकर वाचन और लेखन कराना है । वर्णों को संयुक्त बनाने के लिए रूप के आधार पर इन्हें तीन भागों तथा 'र' को तीन प्रकारों (र्, ्र, ‸) में बाँटा गया है । इन्हें अलग-अलग दिया गया है । शिरोरेखा के नीचे र पूरा होता है ।

(१) सर्वप्रथम पाठ में आए चित्र के शब्द सुनाकर दोहरवाएँ । मोटे अक्षर के संयुक्ताक्षर को श्यामपट्ट पर लिखकर समझाएँ । सभी संयुक्ताक्षर की पहचान होने तक अभ्यास करवाएँ ।

(२) पाठ्यांश पढ़वाकर संयुक्ताक्षरों को रेखांकित करने के लिए कहें । तत्पश्चात विद्‍यार्थियों से संपूर्ण पाठ्यांश का अनुलेखन करने के लिए कहें । देखें कि विद्‍यार्थी विरामचिह्नों सहित शुद्‍ध लेखन करते हैं । विरामचिह्नों-पूर्णविराम, प्रश्नचिह्न, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक और अर्धविराम को समझाकर इनके उचित प्रयोग पर बल दें ।

(३) चित्र दिखाकर और दिए गए शब्दों का प्रयोग कराके एक-एक वाक्य लिखवाएँ ।

(४) संयुक्ताक्षर का अभ्यास होने के पश्चात इन पाठ्यांशों का श्रुतलेखन करवाएँ । विरामचिह्नों सहित शुद्‍ध लेखन पर ध्यान दें ।

● **पहचानो और बताओ :**

६. जुड़ें हम

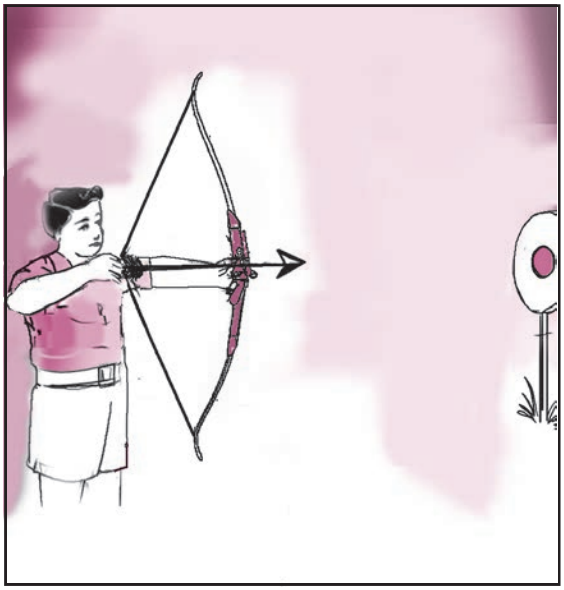

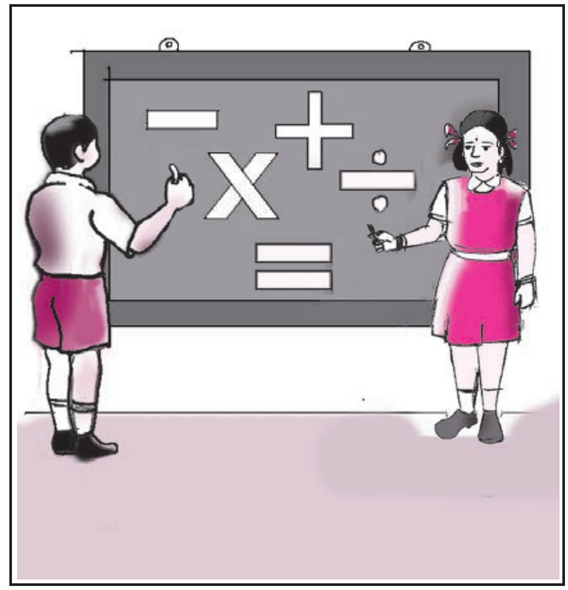

*** सुनो और दोहराओ :**

मुख्य लक्ष्य पर ध्यान लगाओ ।

प्रह्लाद, विद्या चिह्न बनाओ ।

१. पढ़ो :

पाई हटाकर जुड़ें हम

ग्वाला पुष्प
गुच्छा डिब्बा
चप्पल पत्थर

हल लगाकर जुड़ें हम

सिद्धू द्वार
लड्डू खट्टा
बाह्य वाङ्मय

२. मुखर वाचन करो और अनुलेखन करो :

सोआ, मेथी, पालक, चौलाई; हरी सब्जियाँ मन को भाएँ ।
बैंगन, कुम्हड़ा, लहसुन, प्याज; गाजर, मूली बहुत लुभाएँ ।
ककड़ी, मटर, आलू लाओ; लाल टमाटर को मित्र बनाओ ।
चुकंदर, भुट्टा, कद्दू खाओ; हर बीमारी को दूर भगाओ ।।

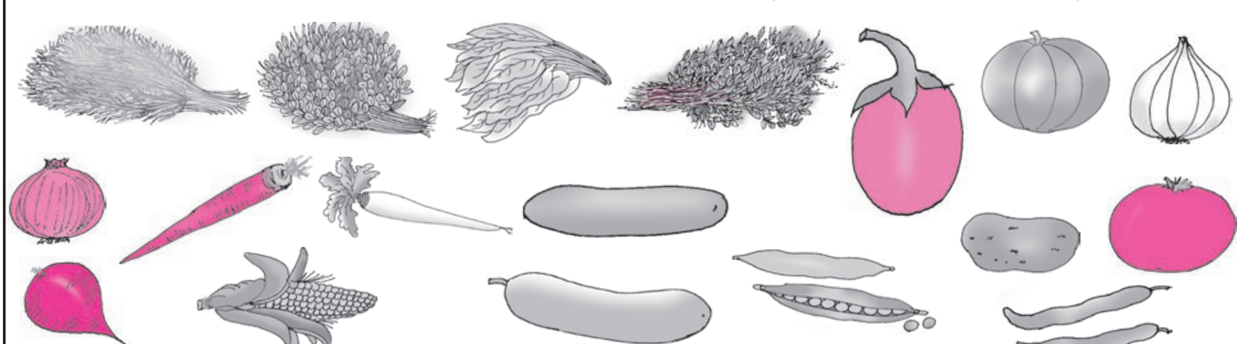

❑ अध्यापन करने से पहले पृष्ठ ३२ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । चित्रों को पहचानकर सब्जियों के नाम कहलवाएँ । आवश्यकतानुसार सहायता करें । दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुओं के नाम कहलवाएँ ।

● **पहचानो और बताओ :**

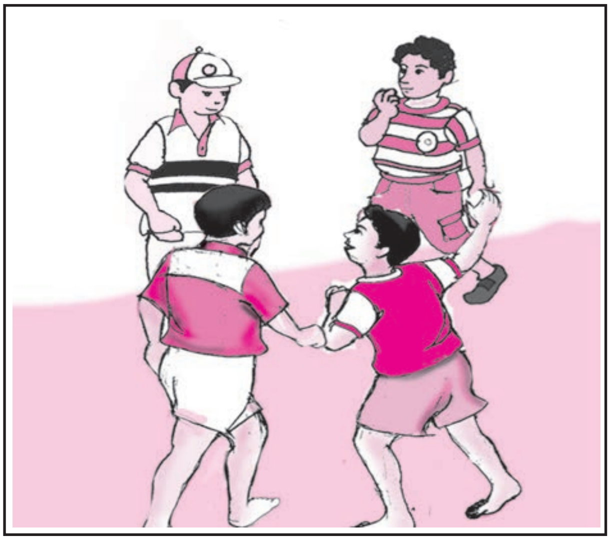

✻ **सुनो और दोहराओ :**

अक्खड़, फक्कड़, गफ्फार, उत्तम । अग्रसर महाराष्ट्र सर्वोत्तम ।

१. पढ़ो :

आधे होकर जुड़ें हम		विभिन्नता से जुड़ें हम	
मक्खी	सिक्का	दर्जी	गंधर्व
रफ्तार	डॉक्टर	इंद्रधनुष	चंद्रमा
शगुफ्ता	मुजफ्फर	मेट्रो रेल	महाराष्ट्र

२. मौन वाचन करो और आपस में श्रुतलेखन करो :

१. सेवा डॉक्टर का कर्तव्य है ।
२. पौधे लगाओ, प्रदूषण हटाओ ।
३. राष्ट्रीय संपदा, स्वच्छ रखें सर्वदा ।
४. मक्खी, मच्छर भगाओ, रोग मिटाओ ।
५. रक्तदान-जीवनदान, नेत्रदान-श्रेष्ठ दान ।
६. विश्वास रखो, अंधविश्वास नहीं ।
७. बेईमानी ठुकराओ, ईमानदारी अपनाओ ।
८. इंद्रधनुष के रंगों की तरह मिलकर रहो ।

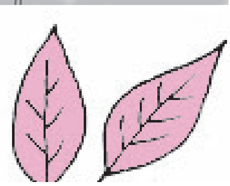

❑ इस पृष्ठ का अध्यापन करने से पहले पृष्ठ ३२ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । सुविचारों को समझाएँ और इसी प्रकार के सुविचारों और सुवचनों का संग्रह करवाएँ । दैनिक व्यवहार में इनका प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें । इंद्रधनुष के रंगों के नाम कहलवाएँ और रंगों की सूची बनवाएँ । विद्यार्थियों से रंगों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की जोड़ियाँ मिलवाएँ ।

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

७. (अ) बोध

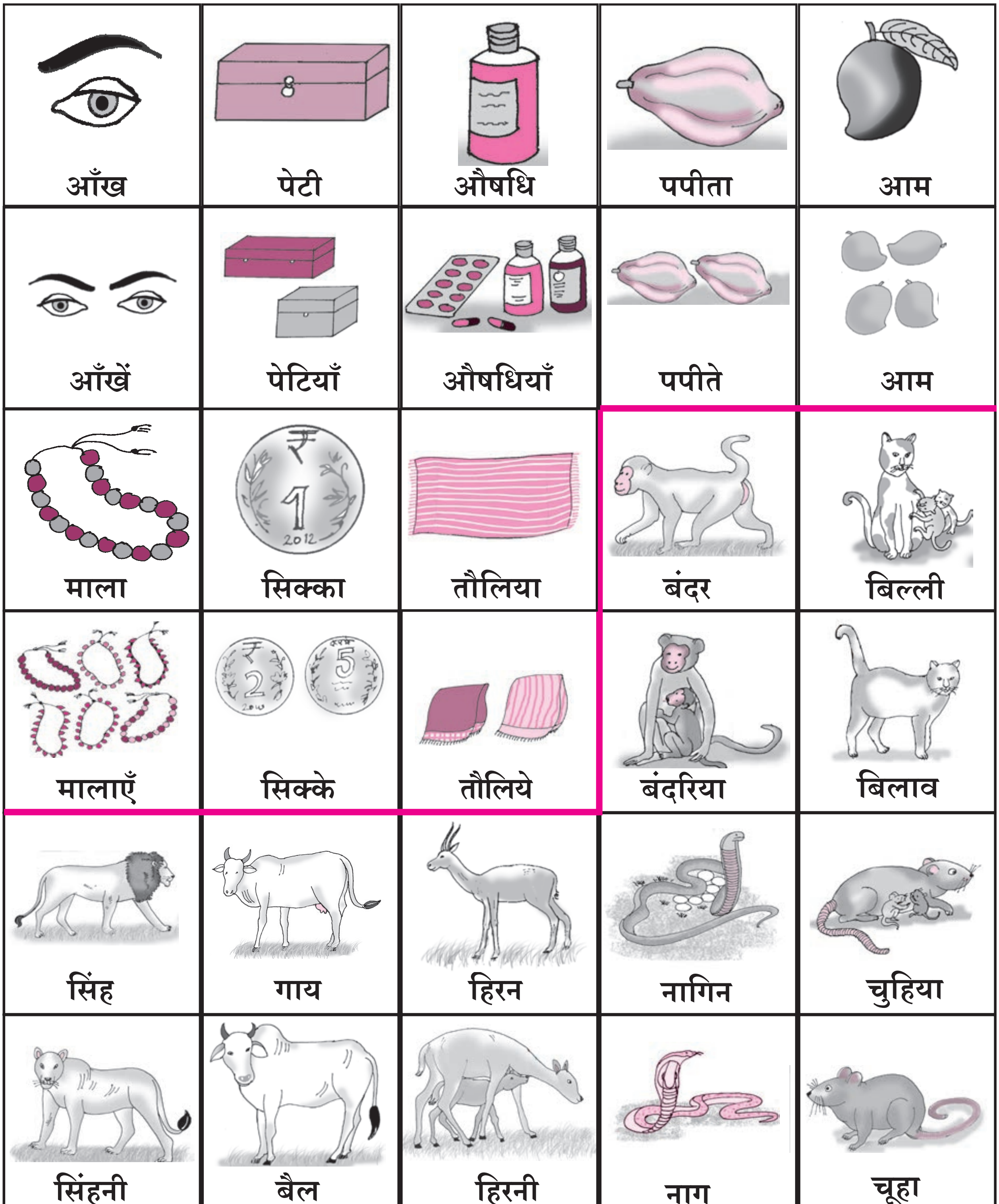

❑ चित्र के माध्यम से वचन और लिंग बोधक शब्द समझाएँ । परिभाषा नहीं बतानी है । अन्य उदाहरण देकर विद्यार्थियों से दृढ़ीकरण करवाएँ । एकवचन-बहुवचन, स्त्रीलिंग-पुल्लिंग से संबंधित अन्य शब्दों का लेखन करवाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । सामान्य बातचीत में ऐसे शब्दों का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें ।

- **पढ़ो और समझो :**

(ब) समान–विरुद्ध

आँख नेत्र	वृक्ष पेड़	पंछी पक्षी	पुष्प फूल
द्‌वार दरवाजा	चारपाई 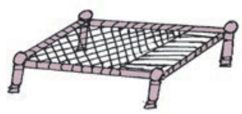 खटिया	सवेरा 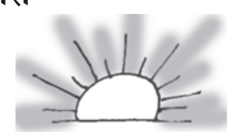 सुबह	केश बाल

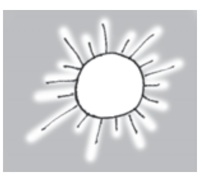 दिन	 रात	 ऊपर	 नीचे
 कम	 अधिक	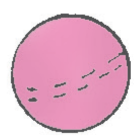 छोटा	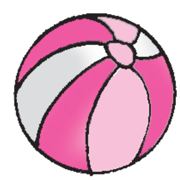 बड़ा
 गरम	 ठंडा	 सुखी	 दुखी
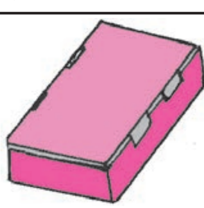 बंद	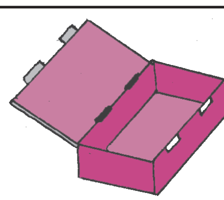 खुला	 आगे	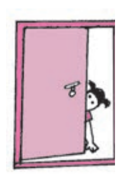 पीछे

❑ चित्र के माध्यम से समानार्थी–विरुद्धार्थी समझाएँ । परिभाषा नहीं बतानी है । अन्य उदाहरण देकर विद्‌यार्थियों से ऐसे शब्दों का दृढ़ीकरण कराके लेखन करवाएँ । पाठ्‌यपुस्तक में आए ऐसे शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । उनका संग्रह कराके सुलेखन, श्रुतलेखन करवाएँ ।

● **पढ़ो और गाओ :**

८. बीज

किसी नदी के किनारे एक बीज पड़ा था । वह बहुत छोटा था । वहाँ एक चिड़िया आई । वह चोंच मारकर बीज को खाने लगी । तब बीज बोला–

" रुकी रहो, रुकी रहो, जमीन में गड़ने दो ।
डाल–पात होने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

चिड़िया चीं–चीं करती उड़ गई ।

कुछ दिन बाद पानी बरसा । पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा । कुछ दिन बाद वहाँ एक बकरी आई । कोंपलें देखकर उसके मुँह में पानी भर आया । वह उन्हें खाने चली । तब कोंपल ने कहा–

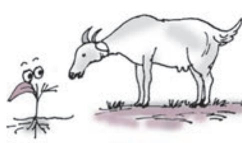

"रुकी रहो, रुकी रहो, जड़ को गहरे जाने दो ।
पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

बकरी यह सुनकर में–में करती चली गई ।

थोड़े दिनों के बाद बीज एक छोटा–सा पौधा बन गया । एक दिन गाय वहाँ आई । उसने पौधे को खाने के लिए मुँह खोला । इतने में पौधे ने कहा –

"रुकी रहो, रुकी रहो, डाल–पात होने दो ।
पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

यह सुनकर गाय रँभाती हुई चली गई ।

बहुत दिन बीत गए । उसकी डालें बड़ी–बड़ी हो गईं । एक दिन फिर वही चिड़िया, बकरी और गाय वहाँ आईं । उन्होंने एक–दूसरे से पूछा, ''वह छोटा पौधा कहाँ गया ?'' तभी पेड़ बोल उठा– "मैं ही बीज हूँ..... मैं ही अंकुर हूँ । मैं ही पौधा हूँ ..... मैं ही पेड़ हूँ । अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।" यह सुनकर सब खुश हो गए ।

– रामेश्वरदयाल दुबे

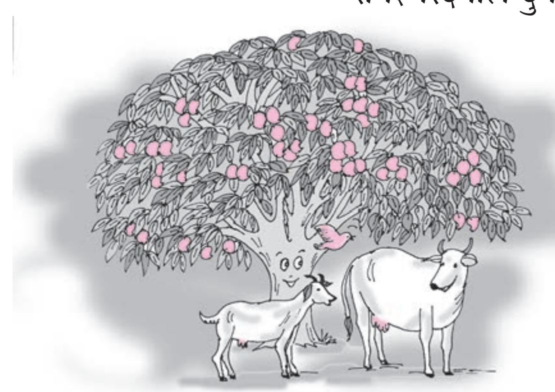

१. **निम्नलिखित वाक्यों को क्रमबद्‌ध करके पुनः पढ़ो :**

(क) पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा ।
(ख) किसी नदी किनारे एक बीज पड़ा था ।
(ग) अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।
(घ) उसकी डालें बड़ी–बड़ी हो गईं ।

२. **चने को गीली मिट्‌टी में बोओ और अंकुरित होकर पौधा होने तक उसका निरीक्षण करो ।**

❑ उचित उच्चारण, आरोह–अवरोह के साथ कविता का वाचन करें । ध्यान से सुनने के लिए कहें । उचित लय के साथ सामूहिक, गुट एवं एकल वाचन कराएँ । कहानी में आई कविता विद्‌यार्थियों को अपने शब्दों में सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

● आकारों के नाम बताओ :

९. मुझे पहचानो

❑ गणितीय आकारों (वर्ग, आयत, त्रिकोण, षटकोण, शंकु आकार, वृत्त, बेलनाकार) की उपयोगी वस्तुओं के नाम कहलवाएँ ।

● **समझो और लिखो :**

१०. मुझे जानो

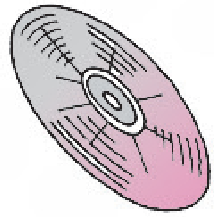
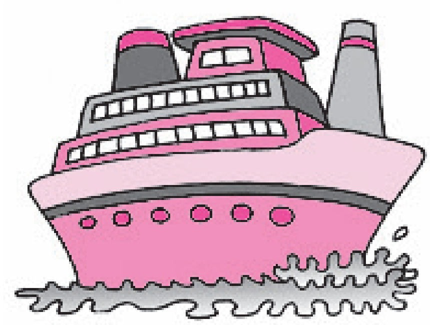

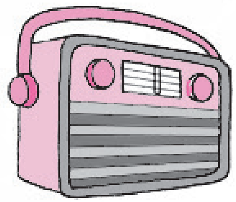
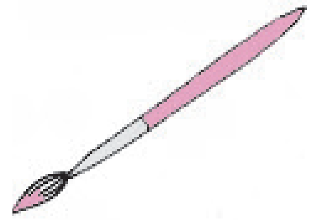

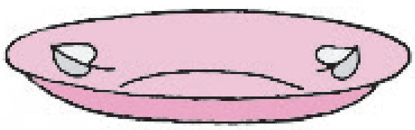
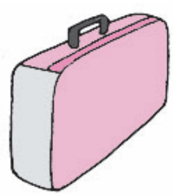
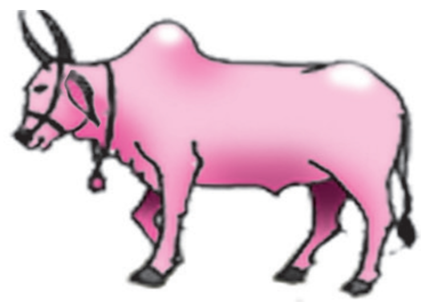
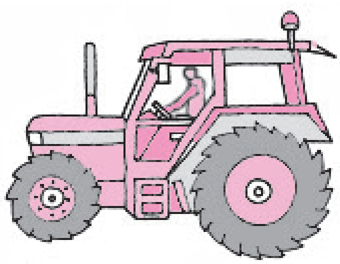

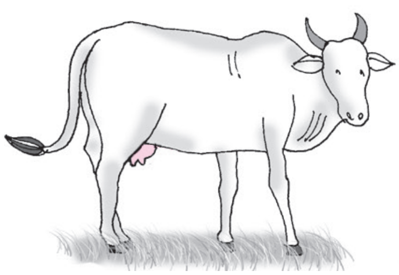

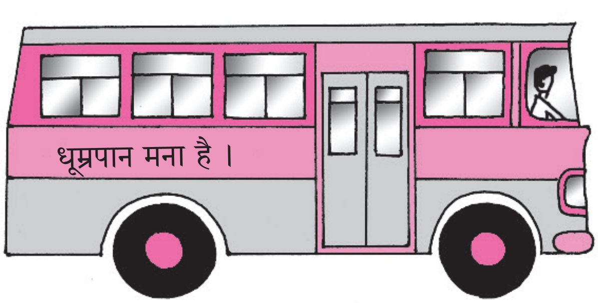

❑ चित्रों के नाम देवनागरी लिपि (हिंदी) एवं रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लिखवाएँ । जैसे जहाज = jahaj आदि । उदाहरणों द्वारा लिप्यंतरण और अनुवाद का अंतर स्पष्ट करें । विद्यार्थियों से समान आकारवाले हिंदी के विभिन्न वर्णों का लेखन करवाएँ ।

● **पढ़ो और गाओ :**

११. वीरों को प्रणाम

देश की मिट्टी का कण-कण है,
जिन्हें प्राण से प्यारा ।
प्रणाम ऐसे वीरों को,
सौ-सौ बार हमारा ।।
यह ऐसी धरती है जहाँ पर,
गंगा-जमना बहती ।
देश पर मर मिटने की,
हरदम धुन-सी रहती ।।
वीरों के बलिदान से,
चमका हिंद वतन का तारा ।
नमस्कार ऐसे वीरों को,
सौ-सौ बार हमारा ।।

यह आजादी नहीं मिली है,
हमें किसी से भीख में ।
सीखा हम लोगों ने कुछ तो,
प्राणार्पण की सीख में ।।
देश की मिट्टी का कण-कण है,
जिन्हें प्राण से प्यारा ।
प्रणाम ऐसे वीरों को,
सौ-सौ बार हमारा ।।

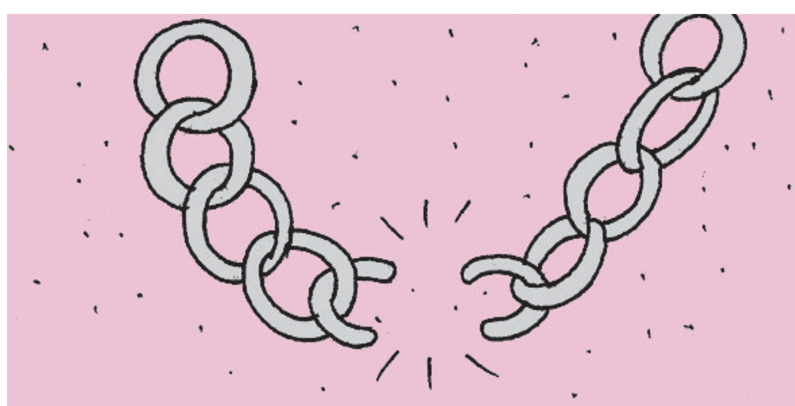

– रमेश दीक्षित

पंक्तियों को क्रम से लगाओ और पढ़ो :

१. प्राणार्पण की सीख में ।।
२. जिन्हें प्राण से प्यारा ।
३. सीखा हम लोगों ने कुछ तो,
४. देश की मिट्टी का कण-कण है,

❑ उचित हाव-भाव से कविता का सस्वर वाचन करें और करवाएँ । उचित लय-ताल में समूह, गुट, एकल पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें । स्वतंत्रता सेनानियों के नाम कहलवाएँ । देशभक्ति की अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

● **पढ़ो, समझो और दोहराओ :**

१२. सपूत

बहुत पुरानी बात है । फुलेरा नामक एक आदर्श गाँव था । गाँव में हर तरफ स्वच्छता थी । गाँव की गलियों में नियमित रूप से झाड़ू लगाई जाती थी । नालियाँ रोज साफ की जाती थीं । लिपाई-पुताई करके घर-आँगन सुंदर रखा जाता था । परिसर में बड़ी संख्या में पेड़-पौधे थे । कुएँ का पानी निर्मल रखने के लिए आवश्यक सावधानियाँ बरती जाती थीं । पनघट स्वच्छ और सुसज्जित था ।

एक दिन पनघट पर तीन स्त्रियाँ पानी भर रही थीं । वे अपने-अपने लाड़ले के गुणों का बखान कर रही थीं । एक बोली, "बहन ! मेरा सपूत बड़ा विद्वान है । जब से शहर से पढ़कर आया है, चारों ओर उसकी धूम मची है । बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लेता है । आकाश के तारों को देखकर उनके नाम बता देता है । देश-विदेश की सभी बातों का उसे पता है ।" दूसरी ने जोश में झट से आगे बढ़कर कहा, "अरी सखी ! मेरे लाल-जैसा बली तो दस-पाँच गाँवों में देखने को भी नहीं मिलेगा । पाँच सौ दंड-बैठक वह रोज सुबह लगाता है । अखाड़े में जब ताल ठोंककर उतर पड़ता है तो बड़े-बड़े पहलवान तक उसका मुकाबला करने से घबराते हैं । वह मेरा सपूत है ।"

अब तीसरी स्त्री की बारी थी पर वह चुप रही । इसपर उन दोनों ने कहा, "बहन, तुम चुप क्यों हो ? लगता है तुम्हारा लड़का कपूत निकला ।" तीसरी स्त्री बिना किसी जोश या

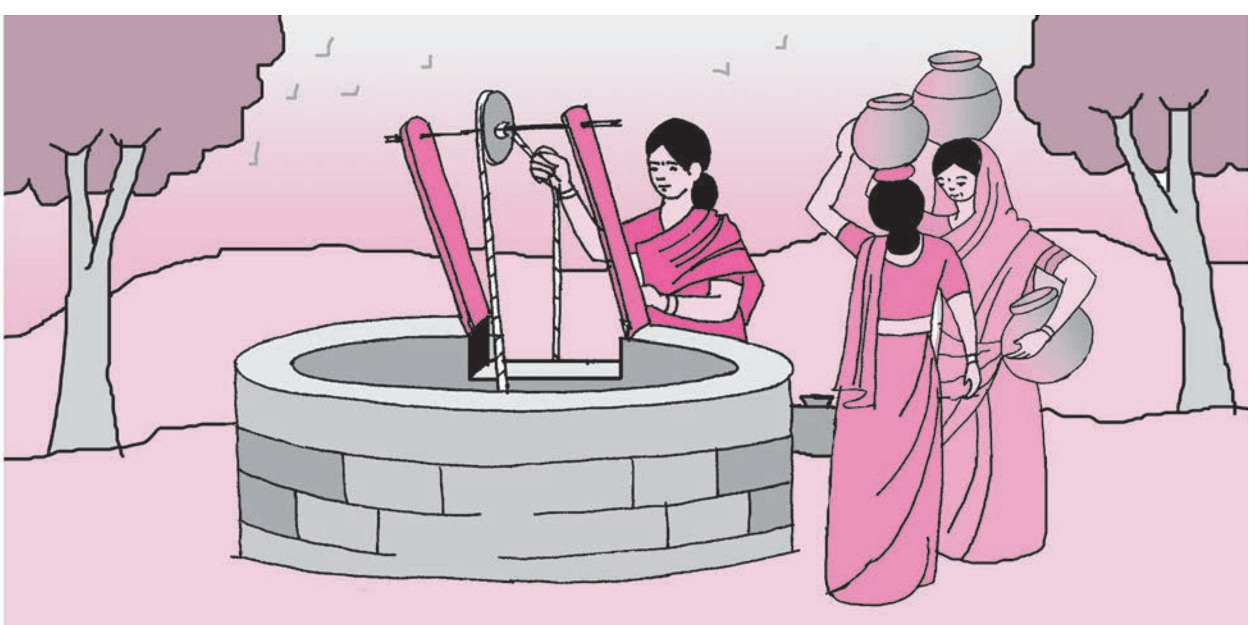

❑ समुचित आरोह-अवरोह और वाचिक अभिनय से कहानी का वाचन करें । सादगी, परिश्रम, मातृभक्ति और दायित्वबोध जैसे मूल्यों से संबंधित कहानियाँ उन्हें सुनाएँ । विद्यार्थियों को अन्य कोई कहानी सुनाने और उसपर चर्चा करने के लिए कहें ।

गर्व से बोली, ''बहनो ! सपूत या कपूत जैसे शब्द तो मैं नहीं समझती पर मेरा लाल मेरे लिए बहुत अच्छा है । वह सीधे-सादे स्वभाव का साधारण किसान है । दिन भर खेत में जुता रहता है । शाम को घर का काम करता है । आज बहुत कहने-सुनने पर वह मेला देखने गया है, इसीलिए मुझे पानी भरने आना पड़ा ।''

तीनों स्त्रियाँ अपने-अपने सिर पर घड़ा रखकर चल पड़ीं । अभी वे दो-चार कदम ही चली थीं कि पहली स्त्री का पुत्र आता हुआ दिखाई पड़ा । पास आते ही उसने अपनी माँ से कहा, ''व्याख्यान देने जा रहा हूँ । भोजन वहीं करूँगा ।'' यह कहकर वह तेजी से चला गया । तभी दूसरी स्त्री का पहलवान पुत्र भी आता हुआ दिखा । वह मतवाले हाथी की तरह झूम रहा था । उसने अपनी माँ से कहा, "माँ, आज दंगल में मैंने एक नामी पहलवान को बुरी तरह पछाड़ा । पानी लेकर जल्दी घर पहुँचना, मुझे जोरों की भूख लगी है ।" यह कहकर वह घर की ओर बढ़ गया ।

अंत में तीसरी स्त्री का पुत्र भी आ पहुँचा । वह बड़ा ही सीधा-सादा था । आते ही उसने अपने माँ के सिर से घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और बोला, "माँ, तुम क्यों पानी भरने चली आईं ? मैं तो आ ही रहा था ।" माँ से घड़ा लेकर वह उत्साह के साथ घर की ओर चल पड़ा ।

यह देखकर अन्य दोनों स्त्रियों का सिर संकोच से झुक गया । उन्हें बोध हो गया था कि कर्तव्य और सेवा के बिना ज्ञान एवं बल अधूरे हैं । वे समझ गईं कि सपूत तो तीसरी स्त्री का बेटा ही है ।

– श्रीकृष्ण

१. तीनों स्त्रियों ने अपने-अपने बेटे की कौन-सी विशेषताएँ बताईं ?

२. अच्छे लड़के/ अच्छी लड़की में कौन-कौन से गुण होने चाहिए, आपस में चर्चा करो ।

❑ कहानी तीन-चार बार पढ़वाएँ । मौन और मुखर वाचन करने के लिए कहें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के आशय पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों को व्यवहार में उतारने का महत्त्व समझाएँ । उनसे चर्चा द्वारा दृढ़ीकरण कराएँ ।

● **पढ़ो और बोलो :**

१३. राष्ट्रीय त्योहार

(विद्‌यार्थी कक्षा में राष्ट्रीय त्योहारों पर चर्चा कर रहे हैं ।)

ज्ञान : स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं ।

आकांक्षा : अमर सपूतों के अथक प्रयासों से १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश स्वतंत्र हुआ ।

त्र्यंबक : यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

ज्ञान : आजादी मिलने के बाद बड़ी लगन से देश का संविधान बनाया गया तथा २६ जनवरी १९५० को इसे देश में लागू किया गया ।

आकांक्षा : इसीलिए २६ जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

क्षितिज : २६ जनवरी और १५ अगस्त के दिन और क्या-क्या होता है ?

ज्ञान : राष्ट्रीय त्योहारवाले दिन राष्ट्रध्वज फहराते हैं । राष्ट्रगीत गाते हैं । राज्य, जिला, शहर, गाँव, तथा विद्‌यालयों में इन त्योहारों को धूमधाम से मनाते हैं । प्रभात फेरियाँ निकालते हैं । जगह-जगह सजावट और रोशनी की जाती है ।

क्षितिज : यह आजादी बड़े संघर्षों के बाद मिली है । हमें इसकी रक्षा करनी है ।

त्र्यंबक : हाँ ! हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को सदैव याद रखना होगा । अपने तिरंगे का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है ।

आकांक्षा : राष्ट्रीय त्योहारों पर झंडावंदन के लिए सभी का समय पर उपस्थित होना आवश्यक है । राष्ट्रगीत के समय सदैव सावधान की मुद्रा में खड़े रहें । राष्ट्रीय त्योहार हमें पूरी निष्ठा के साथ आनंदपूर्वक मनाने चाहिए ।

उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

१. स्वतंत्रता दिवस	१. सदैव सावधान की मुद्रा में खड़े रहें ।
२. २६ जनवरी	२. समय पर उपस्थित होना आवश्यक है ।
३. राष्ट्रगीत के समय	३. गणतंत्र दिवस
४. झंडा वंदन के लिए	४. १५ अगस्त

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करवाएँ । विद्‌यार्थियों से आजादी के महत्त्व पर चर्चा करें । समय पालन और अनुशासन के महत्त्व पर चर्चा करें । देशभक्ति के गीतों का संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । 'जनगणमन' राष्ट्रगीत का महत्त्व बताएँ ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

१४.(अ) हम अलग – रूप एक

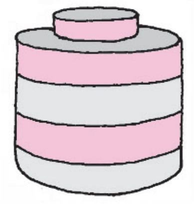 टंकी	शंख	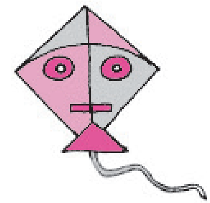 पतंग	कंघी
कंचा	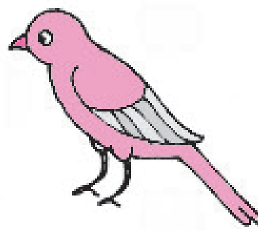 पंछी	जंजीर	झंझावात
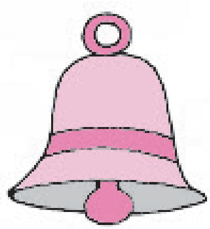 घंटा	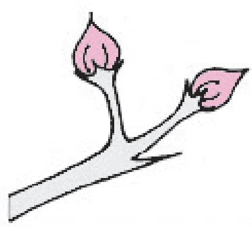 डंठल	डंडा	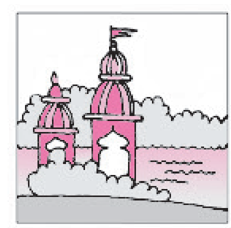 पंढरपुर
संतरा	ग्रंथ	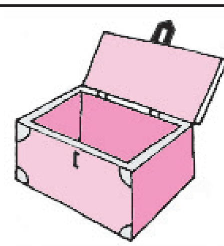 संदूक	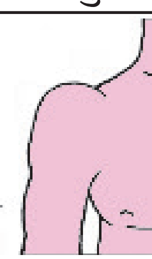 कंधा
चंपा	गुंफन	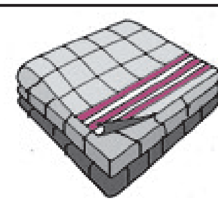 कंबल	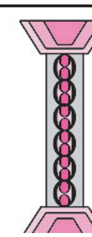 खंभा

❑ क,च,ट,त,प, वर्ग के पंचमाक्षर ङ,ञ,ण,न,म हैं । ये अपने ही वर्ग के शेष चार वर्णों में से किसी भी वर्ण से मिले तो अनुस्वार उसके पहले वाले वर्ण पर लगता है । उदा.– शंख (शङ्ख), 'क' वर्ग का पंचमाक्षर 'ङ' वर्ण 'ख' से मिले तो अनुस्वार पहले वर्ण 'श' पर लगता है । इसी प्रकार – पंछी, डंडा, कंधा, चंपा आदि । पंचमाक्षरयुक्त शब्दों का सामूहिक अनुकरण एवं मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । उनसे पंचमाक्षर के प्रयोग पर चर्चा करें एवं समझाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें और उनका लेखन करवाएँ ।

● **पढ़ो और अनुलेखन करो :**

(ब) छुक-छुक गाड़ी

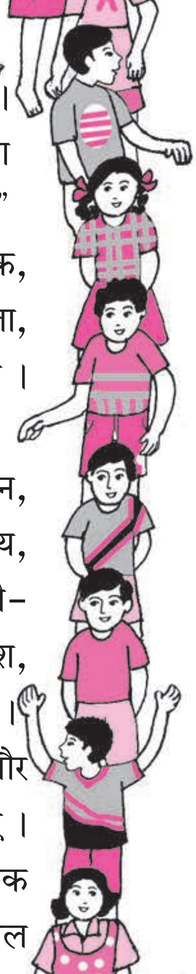

रविवार का दिन था । पाठशाला में छुट्टी थी । आसपास के बच्चे इकट्ठे हो गए । वर्ष उनमें सबसे बड़ा था । उसने कहा, "चलो, छुक-छुक गाड़ी खेलते हैं ।" सभी बच्चे उछल पड़े । वर्ष ने कहा, "पहले मैं हाजिरी लूँगा । सभी एक, दो, तीन बोलो ।" हाजिरी में एक से चौबीस तक उपस्थित थे । वर्ष बोला, "मेरा क्रमांक पच्चीस हुआ । अब मैं सबको संख्या के अनुसार नाम दूँगा । सभी एक पंक्ति में खड़े हो जाओ ।" उसने निम्न प्रकार से नाम दिए :

एक-चैत्र, आठ-कार्तिक, पाँच-श्रावण, दो-वैशाख, सात-आश्विन, चार-आषाढ़, अठारह-आग्नेय, छह-भाद्रपद, दस-पौष, पंद्रह-नैऋत्य, इक्कीस-पश्चिम, बाईस-उत्तर, तेईस-दक्षिण, सत्रह-वायव्य, नौ-अग्रहायण, बारह-फाल्गुन, तीन-ज्येष्ठ, सोलह-ईशान्य, चौदह-आकाश, ग्यारह-माघ, तेरह-इंद्रधनुष, उन्नीस-बादल, चौबीस-धरती, बीस-पूर्व ।

वर्ष इंजन बन गया । सभी बच्चे उलटे क्रम से अपना क्रमांक और नाम बोलते हुए इंजन के पीछे जुड़ते गए । बाद में छह बच्चे और जुड़ गए । इस तरह शुरू हो गया-छुक-छुक गाड़ी का खेल । तुम सब भी छुक-छुक गाड़ी का खेल खेलो । यह खेल गरमी, वर्षा, सरदी हर मौसम में खेल सकते हो ।

लिखो :

१. सप्ताह के नाम ।
२. महीनों के नाम ।
३. ऋतुओं के नाम ।
४. एक से पच्चीस तक की गिनती अंकों में ।

❑ पाठ का उचित उच्चारण के साथ वाचन करें । एक- एक परिच्छेद का अनुलेखन और श्रुतलेखन कराएँ । एक से पच्चीस तक के अंकों को अक्षरों में लिखने हेतु प्रेरित करें । विद्यार्थियों से बाद में आए छह बच्चों के नाम ऋतुओं के आधार पर रखवाएँ ।

- **अनुलेखन करो :**

१५. ज्ञानी

(बंडूभाऊ और सुदामा का परिवार आमने-सामने रहता है । दोनों के बच्चे आपस में साथ-साथ हँसते-खेलते हैं । दोनों परिवार एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होते हैं । दोनों की मातृभाषा भिन्न है । इसके चलते एक ही शब्द के दोनों भाषाओं में अलग-अलग अर्थ होने के कारण कई बार उनके बीच मनोरंजक स्थिति बन जाती है । ऐसी ही स्थिति आज भी बनी ।)

बंडूभाऊ – मना करने के बाद भी बच्चे बरसात में भीग रहे हैं । अंदर बुलाकर उन्हें शिक्षा दो ।

सुदामा – अरे बंडूभाऊ मैं क्यों शिक्षा दूँ ? शिक्षा तो उन्हें विद्‌यालय में मिल जाती है ।

बंडूभाऊ – तो क्या बच्चे ऐसे ही भीगते रहेंगे ?

सुदामा – बच्चे तो बंदर होते हैं । इसलिए खेलते ही रहेंगे ।

बंडूभाऊ – लेकिन जब आसपास कहीं समुद्र नहीं है तो बच्चे बंदर पर कैसे जाएँगे ?

सुदामा – अच्छा, जरा बैठो । मैं भीगा हुआ ऊन का स्वेटर सुखाने के लिए फैला आता हूँ ।

बंडूभाऊ – तुम ऊन के स्वेटर को ऊन में कैसे सुखा सकते हो ?

सुदामा – अच्छा यह सब छोड़ो, बेटी को खत भेजा कि नहीं ?

बंडूभाऊ – अरे सुदामा ! खत तो खेत में डालते हैं, बेटी को क्यों भेजें ?

यदि वे दोनों हिंदी और मराठी भाषाएँ समझते तो शायद यह स्थिति नहीं बनती । इसलिए कहते हैं कि जो जितनी अधिक भाषाएँ सीखता है, उसका ज्ञान उतना ही बढ़ता है ।

पढ़ो, समझो और लिखो :

हिंदी अर्थ | समोच्चारित शब्द | मराठी अर्थ

पढ़ाई ← शिक्षा → दंड

वानर ← बंदर → बंदरगाह

ऊन ← ऊन → धूप

हिंदी अर्थ | समोच्चारित शब्द | मराठी अर्थ

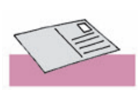
पत्र ← खत → खाद

घास ← घास → निवाला

ठंडी ← जाड़ा → मोटा

❑ विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन करवाएँ । पाठ में आए आमने-सामने जैसे शब्द युग्म, हिंदी और मराठी में समोच्चारित भिन्नार्थी तथा समानार्थी शब्दों पर चर्चा करें । लेखन में विरामचिह्नों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करें । छोटे परिवार के महत्त्व को समझाएँ ।

● **पढ़ो, समझो और आपस में श्रुतलेखन करो :**

१६. बचाव

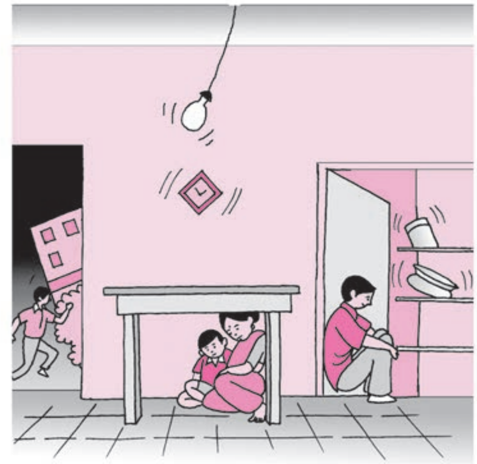

भूकंप

पृथ्वी के भीतर चट्टानों की परतों के आगे-पीछे खिसकने से धरती हिलने लगती है । यही भूकंप है । इससे छत, दीवारें आदि गिरने लगती हैं । ऐसे समय हमें तुरंत घर के बाहर खुली जगह में आ जाना चाहिए या मेज, लकड़ी के तख्त के नीचे, दरवाजे के पीछे छिपना चाहिए ।

बाढ़

लगातार अधिक बारिश होने पर नदी-नाले पानी से भरकर बहने लगते हैं । नदी के आस-पास के गाँवों, बस्तियों, इमारतों आदि में पानी भरने लगता है । फसलें नष्ट हो जाती हैं । यही बाढ़ है ।

पानी के बढ़ने की सूचना प्राप्त होते ही हमें सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाना चाहिए ।

त्सुनामी

समुद्र के तल में भूकंप आने पर ऊँची-ऊँची लहरें उत्पन्न होती हैं । यही त्सुनामी है ।

त्सुनामी की सूचना मिलते ही तटवर्ती प्रदेश में रहने वाले लोगों को तुरंत ही सुरक्षित स्थानों पर चले जाना चाहिए । हमें समुद्र तट को पाटकर बस्तियाँ नहीं बनानी चाहिए । त्सुनामी की पूर्व सूचना देने वाले यंत्र आजकल विकसित हो रहे हैं ।

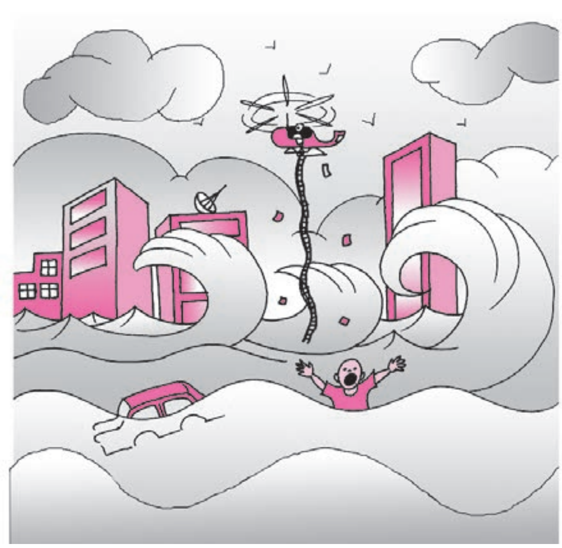

प्राकृतिक विपदाएँ कौन-कौन-सी हैं, लिखो ।

❑ विद्‌यार्थियों से परिच्छेद का वाचन करवाकर श्रुतलेखन कराएँ । पाठ में आए और अन्य विभक्ति चिह्नों को समझाएँ । प्राकृतिक आपदाओं के कारणों और उनसे बचाव के तरीकों पर चर्चा करवाएँ । किसी एक आपदा पर आठ से दस वाक्य लिखवाएँ ।

● **समझो और बताओ :**

१७. निरीक्षण

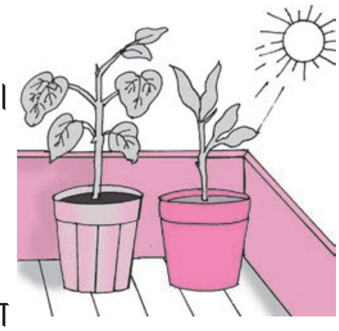

१. किसी एक प्रकार के दो बीज जैसे चना/मूँग/मटर/जौ आदि लो ।

२. उन्हें दो अलग-अलग गमलों में बोओ ।

३. प्रत्येक दिन दोनों गमलों में थोड़ा-थोड़ा पानी छिड़को ।

४. तुम देखोगे कि दो-तीन दिन बाद दोनों गमलों में अंकुर उग आए हैं ।

५. अंकुरों को बढ़ने के लिए थोड़ा समय दो । तीन-चार दिन में वे पौधों में बदल जाएँगे ।

६. पहले गमले को छत, आँगन या ऐसे स्थान पर रखो जहाँ पौधों को सीधे धूप लग सके ।

७. दूसरे गमले को कमरे में ऐसे स्थान पर रखो जहाँ धूप न आती हो ।

८. पाँच दिन बाद दोनों पौधों का निरीक्षण करो ।

९. तुम देखोगे कि धूप में रखे पौधे के पत्ते हरे हैं । वे अधिक स्वस्थ हैं ।

१०. छाया में रखे पौधों के पत्ते मुरझाए हैं और कुछ-कुछ पीले पड़ गए हैं ।

११. ऐसा क्यों हुआ, सोचो और आपस में चर्चा करो ।

१२. अपना निष्कर्ष शिक्षक को बताओ ।

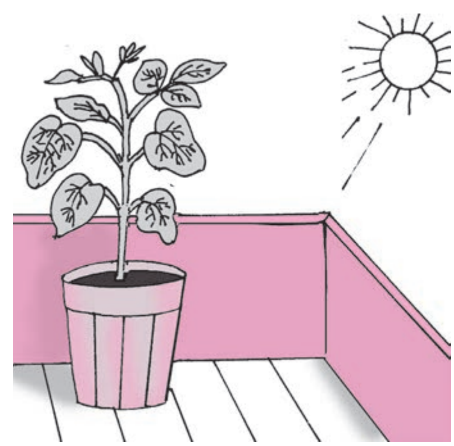

पढ़ो, सोचो और लिखो :

१. धूप में रखा पौधा हरा क्यों है ?

२. कमरे में रखा पौधा क्यों मुरझा गया ?

❑ विद्यार्थियों को प्राकृतिक परिवर्तनों का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करें । सूर्योदय और सूर्यास्त के समय की समानताएँ और विभिन्नताएँ बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों में अन्य प्रयोगों द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें ।

● **मार्ग बताओ :**

१८. चलो– चलें

❑ चित्र का निरीक्षण कराएँ । चित्र में आए सांकेतिक चिह्नों का वाचन एवं परिचय कराएँ । विद्यार्थियों से गोलू-भोलू को मोटर से पेंग्विन के घर तक पहुँचाने वाले मार्ग को रेखांकित करने के लिए कहें । इसी प्रकार के अन्य सांकेतिक चिह्न बताने के लिए प्रेरित करें ।

* स्वयं अध्ययन *

*** चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ :**

१

आसमान में उड़ते ढेर सारे कबूतर । नीचे खड़ा बहेलिया ।

२

बहेलिए द्‌वारा जाल बिछाना, दाना बिखेरना ।

३

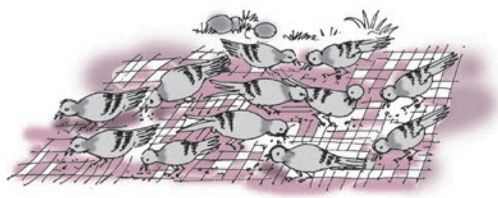

कबूतरों का दाना चुगना ।

४

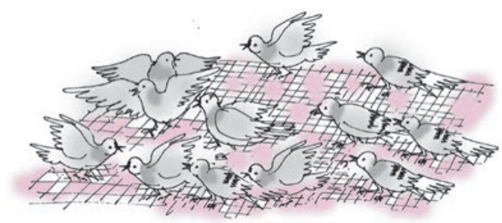

कबूतरों का जाल में फँसना ।

५

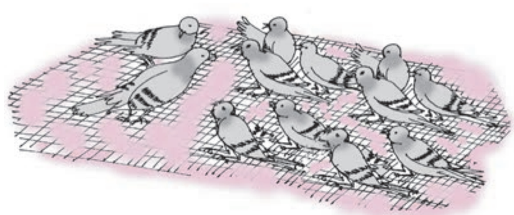

बुजुर्ग कबूतर द्‌वारा समझाना ।

६

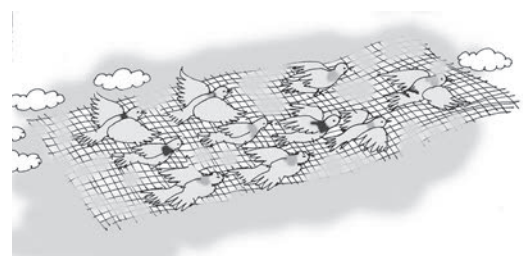

कबूतरों का जाल समेत उड़ना ।

७

हक्का-बक्का, दौड़ता हुआ बहेलिया ।

८

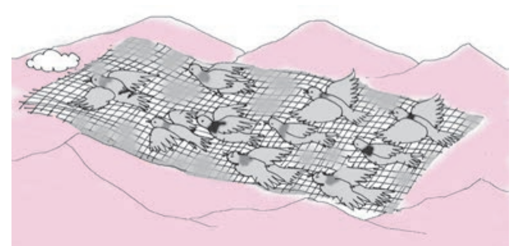

दूर पहाड़ों की खाई में कबूतरों का जाल समेत उतरना ।

९

स्वयं सोचो ।

१०

कबूतरों का मुक्त होकर उड़ना ।

* पुनरावर्तन– ३ *

१. अनुस्वारवाले (ं) शब्दों को सुनो, समझो और दोहराओ :

अङ्क–अंक, चञ्चल–चंचल, झण्डा–झंडा, सुन्दर–सुंदर, मुम्बई–मुंबई; टंकी, पंख, पतंग, कंघी, कंचा, पंछी, अंजीर, झंझावात, घंटी, कंठ, डंडा, पंढरपुर, संत, पंथ, बंदर, कंधा, पंप, गुंफन, कंबल, खंभा ।

२. रास्ते में घायल पक्षी को देखकर तुम्हारे मन में कौन–से भाव आते हैं, बताओ ।

३. पढ़ो, समझो और मोटे अक्षरों में लिखित शब्दों पर चर्चा करो ।

(क) **मैं** पाँचवीं कक्षा **में** पढ़ रहा हूँ ।
(ख) मृणाल ने पूछा, "उदय ! **कहाँ** गए थे ?" उदय ने **कहा**, "मैं भोपाल गया था ।"
(ग) रौनक बिल्ली की **ओर** लपका **और** वह भाग गई ।
(घ) राजू खेल रहा **है** । उसके साथी बैठे **हैं** ।
(ङ) सोहन **की** बिल्ली इतनी प्यारी है **कि** सब उसे उठा लेते हैं ।

४. उचित शब्द बनाकर लिखो :

ख आँ	र पै	न का	ठ हों
ज ग का	ट ना घु	र द बं	त र भा
ई र पा चा	व ली दी पा	ला शा ठ पा	वा ल री फु

५. वर्ण के अवयवों का उपयोग करते हुए अपने मन से चित्र बनाओ ।

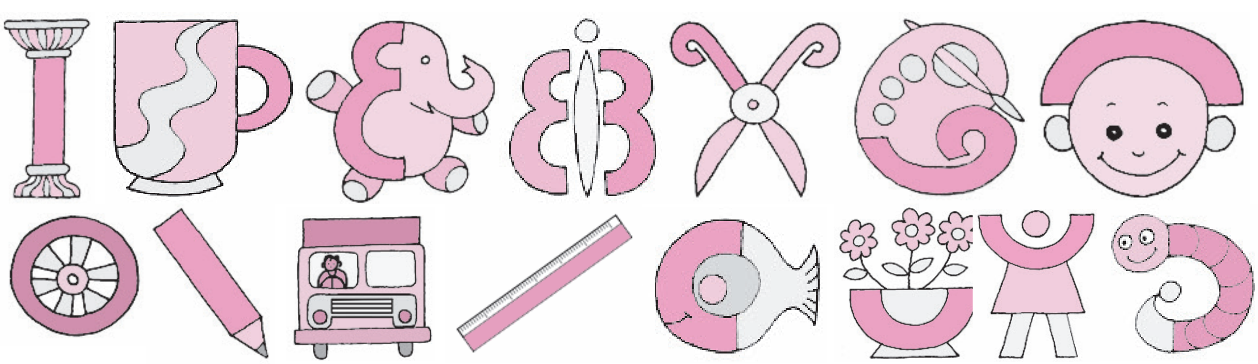

कृति/उपक्रम

विद्यालय में पहले दिन के अपने अनुभव सुनाओ ।	किसी समारोह के बारे में पाँच वाक्य बोलो ।	प्रति सप्ताह पंचतंत्र/हितोपदेश की कहानियाँ पढ़ो ।	प्रति माह एक चित्र बनाकर उसका वर्णन दो–तीन वाक्यों में लिखो ।

✻ पुनरावर्तन– ४ ✻

१. सुनो और दोहराओ :

मैं		रहा/ रही हूँ।
हम		रहा/ रही है।
तू	जा	रहे हो/ रही हो।
तुम		रहे हैं/रही हैं।
आप		

यह		
ये		रहा है/ रही है।
वह	जा	रहे हैं / रही हैं।
वे		

२. तुम्हारे मित्र के पास कॉपी खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। तुम्हारी माँ ने मेला देखने के लिए तुम्हें तीस रुपये दिए हैं, इस स्थिति में तुम्हारे मन में कौन-से भाव जगते हैं, बताओ।

३. पढ़ो और समझो :

विद्‌यालय : जहाँ विद्‌यार्थी पढ़ते हैं। **खेल खेलने वाला** : खिलाड़ी।

जादूगर : जादू दिखाने वाला। **सच बोलने वाला** : सत्यवादी।

४. सिग्नल के चित्रों का वाचन करो और सिग्नल पार करते समय तुम क्या सावधानी बरतते हो, लिखो :

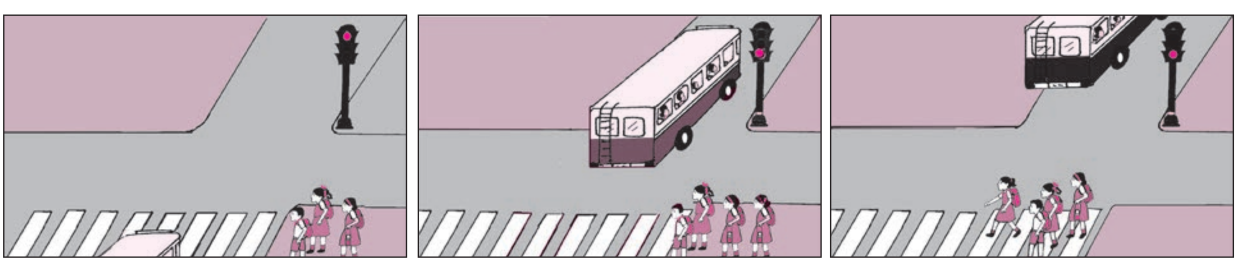

५. पढ़ाई करने के बाद भी तुम्हें परीक्षा से डर लग रहा है तो तुम क्या करोगे, बताओ :

(क) बड़ों से बातचीत करोगे। (ख) खेलने जाओगे। (ग) गाना सुनोगे अथवा गाओगे। (घ) आराम करोगे।

कृति/उपक्रम

भारत की पाँच विशेषताएँ सुनाओ।

परिसर में देखे हुए वृक्षों के नाम बताओ।

पुस्तकालय में तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ो।

तुम्हें कौन-से खेल पसंद हैं और क्यों, लिखो।

✻ शब्दार्थ ✻

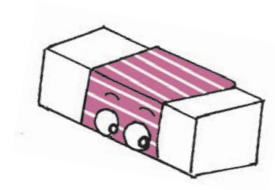

पहली इकाई

२. **बूँदें : शीतल** = ठंडा; **पपीहा** = चातक पक्षी; **हरषाना** = आनंदित/खुश करना; **पुरवाई** = पूरब से आने वाली हवा; **इठलाना** = इतराना; **मुसकाना** = हँसना ।

३. **योग्य चुनाव : इनाम** = पुरस्कार ।

९. **नीम : ओझा** = झाड़-फूँक करने वाला; **वैद्‌य-हकीम** = चिकित्सक ।

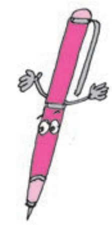

१०. **गड़ा धन : अल्हड़पन** = मनमौजी; **झिझकना** = संकोच करना; **हताश** = निराश; **निराई**= खर-पतवार निकालना ।

११. **मित्रता : बुआ जी** = पिता जी की बहन; **अस्पताल** = दवाखाना ।

१३. **पहचान हमारी – भाग २ : गुड़हल** = एक फूल; **सहिजन** = एक सब्जी; **अंबर** = आकाश ।

१४. **मैं सड़क हूँ : वर्दी** = गणवेश; **कोलतार** = डामर ।

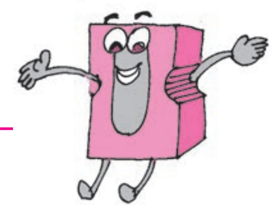

दूसरी इकाई

२. **जीवन : विश्राम** = आराम; **अपनत्व** = अपनापन ।

३. **भाई-भाई का प्रेम : भाव-विभोर होना** = बहुत आनंदित होना ।

११. **वीरों को प्रणाम : आजादी** = स्वतंत्रता; **प्राणार्पण** = प्राणों का अर्पण, बलिदान; **आँखें भर आना** = आँसू आना ।

१२. **सपूत : बखान** = वर्णन; **धूम मचाना** = प्रसिद्‌धि पाना, शोर मचाना ; **बली** = बलवान; **मुकाबला** = प्रतियोगिता; **कपूत** = दुर्गुणी पुत्र; **पछाड़ना** = हरा देना; पीछे छोड़ देना; **चारों खाने चित होना** = पराजित होना ।

१६. **बचाव : पाटना** = गड्ढा भरना ।

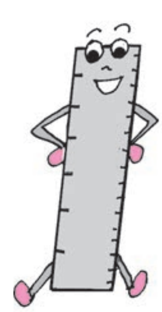

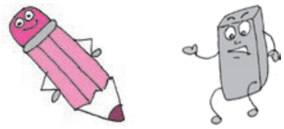

✻ शब्द पहेली ✻

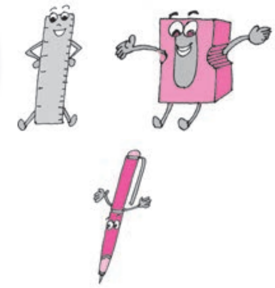

✻ चित्रों को देखकर नीचे दी गई शब्द पहेली बूझो :

(एक अक्षर का एक से अधिक बार उपयोग कर सकते हैं ।)

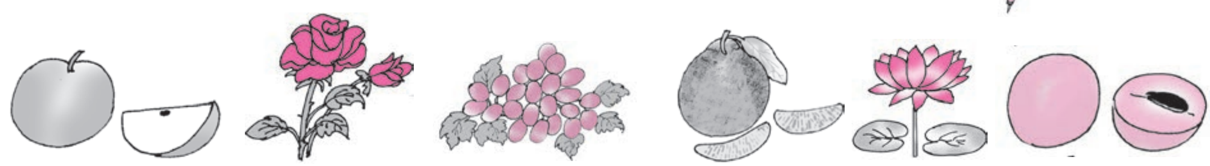

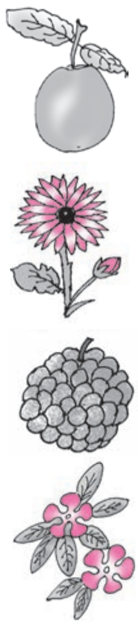

से	सं	सी	ह	आ	अं	ड़
सू	ब	गु	अ	दा	फ	द
मु	के	खी	सिं	न्ना	ड	बे
ची	म	प	त	जी	र	क
का	कू	ता	गें	रा	ज	लि
न	गा	ला	ल	या	गं	रू
धा	ना	पी	गू	नी	स	हा

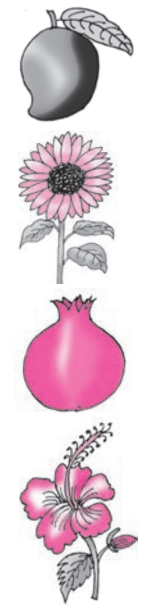

✻ उत्तर ✻

स्वयं अध्ययन – पृष्ठ २३ : १. स्पायडर मैन, २. पत्ता, पालक, पिचकारी, पीढ़ा, पुल, पूँछ, पृष्ठ, पेड़, पैसा, पोथी, पौधा,पंख, प्रातः, पाँच, पॉपकॉर्न ।

पुनरावर्तन – २, पृष्ठ क्र. २५, प्रश्न ४ : आम, पीपल, कमल, नीम, अंगूर, शमी, अशोक, गुलाब, इमली, बेल, केला, गुड़हल, नारियल ।

शब्द पहेली – पृष्ठ क्र. ५४, फूल : कमल, हरसिंगार, गुलाब, गुड़हल, डहलिया, रजनीगंधा, बेला, सूरजमुखी, सदाबहार । **फल :** केला, अमरूद, अनार, चीकू, अंगूर, सेब, पपीता, आम, अंजीर, संतरा, सीताफल, अनन्नास ।

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा प्रयोग और व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है । इसमें क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन, देखो और सुनो, पढ़ो, देखो और बनाओ, देखो और करो, समझो, अनुरेखन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'शब्दार्थ' का उपयोग करें । 'पहचान हमारी' के सभी भागों में नीचे दिए गए 'पढ़ो' के शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनसे विद्यार्थी सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है अतः विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, भाषा प्रयोग और व्यावहारिक सृजन का सतत मूल्यांकन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

● **लिखो, पढ़ो और सुनाओ :**

वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अँ	ऑ
क	ख	ग	घ	ङ			
च	छ	ज	झ	ञ			
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	
त	थ	द	ध	न			
प	फ	ब	भ	म			
य	र	ल	व				
श	ष	स	ह	ळ			
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र				

१. वर्णमाला क्रम से सुनाओ ।

२. वर्णमाला लिखकर पढ़ो ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुलभभारती इयत्ता पाचवी

₹ २५.००